वाणी

अनुक्रमणिका

34.....संपादकीय

35.....झलकियाँ.....राहुल जैन

37.....बिट्स : इतिहास के पन्नों से.....अनिरुद्ध मिश्र, आवेश सिंह, प्रियंक चौहान, मुद्रिका सिंहल

47.....तस्मै श्री गुरुवे नमः.....प्रवीण बंसल, रोहित गोयल

49.....मेरे सपनों की कक्षा.....हर्षित श्रीवास्तव

50.....छात्र शिक्षक समन्वय @BITS - एक नज़र..... असीम गुप्ता, पुरूजीत सिंह चौहान

54.....HAATH-EE.....क्षितिज सेठी

55.....मन के करीब 'परभाषी काव्यदीप'.....दिव्यांशु चौधरी, यशादित्य व्यास, प्रियंक चौहान

57.....कलम.....विनायक केसरवानी

58.....घुटन.....अर्चित अग्रवाल

59.....आशा - एक सफर.....राजेश कुमार विजयवर्गीय

60.....बादल की तरह बिखर जाने को दिल करता है..... रुपेश नलवाया

60.....जीवन की खोज.....राम प्रकाश यादव

61.....तो क्या हुआ!.....अनिरुद्ध मिश्र

62.....क्षितिज.....विनायक केसरवानी

63.....फिर कुरुक्षेत्र.....अरुण कुमार पूनिया

64.....अंतर्द्वंद्व.....रोहित गोयल

65.....अंधविश्वास.....हार्दिक मित्तल, निधी अग्रवाल, गोविन्द शर्मा

66.....स्थिरता जीवन की .....विक्रान्त शर्मा

67.....संकलन रचना का.....यशादित्य व्यास

69.....बिट्स के बाहर, बिट्स के साथ - WILP..... अंकिता दैया, नितिशा सौम्या

70.....छात्रों का काम, बिट्स के नाम.....सुयश आहूजा, अंचल गुप्ता

73.....बिट्स के बाद, बिट्सियन्स के साथ.....आकृति श्रीवास्तव, प्रणय दुबे, ऐश्वर्या नलवाया

76.....सार पचास शब्दों का.....अनिरुद्ध मिश्र, प्रियंक चौहान

77.....कल भी, आज भी और कल भी.....दिव्यांशु चौधरी, इला श्री

79.....DC.....रोहित पमनानी

संपादकीय

बिट्स पिलानी स्वर्णजयंती वर्ष मेरे सामने से गुज़रता जा रहा था और मैं इससे अनजान, चुपचाप ही अपनी धुन में लगा हुआ अपने शेष बिट्सियन जीवन के बचे-खुचे लम्हों को और ज्यादा जीने के प्रयास में था| 'वाणी' के सम्पादन की जिम्मेदारी तो आई पर इस बात का भान देर से हुआ कि इस वर्ष का 'बिट्स' के लिए कुछ अलग ही महत्त्व है| अंकों के महत्त्व के आगे मेरी लापरवाही कुछ डगमगाने तो लगी थी पर जहाँ तक मुझे याद है, शायद ही मुझमें कोई ध्यान देने योग्य परिवर्तन आया था| विचार आया कि क्यों न इस विशेष-अंक को "वाणी" के विशेषांक में बदल दिया जाए| पिछले वर्ष की वाणी टीम के साथ कार्य करने के कारण इस बार कुछ अलग करने का मन तो पहले से ही था, पर अब तो यह एक जिम्मेदारी भी थी| अब मेरे समक्ष बचने का कोई रास्ता न था, सो चल पड़ा|

'शब्द' कम थे, 'जगह' उससे भी कम और उस पर 'बिट्स-पिलानी' जैसे संस्थान के इतिहास के साथ न्याय करने का दबाव| उफ़! शुरुआत में तो मन थोड़ा विचलित भी हुआ था और कभी-कभी तो ऐसा भी लगा कि कहाँ इस चक्कर में पड़ गया? पर एक बार जब बिट्स इतिहास की कुछ कहानियाँ टटोलना शुरू किया तो इतिहास का महत्व समझ आने लगा| ये वही इतिहास था जो कभी विद्यालय में मुझे 'अनावश्यक' विषय लगा करता था| मुझे समझ आने लगा था कि न जाने कितने ही कर्मठ और विद्वान जीवनों के 'तप' के बल पर खड़े होने के बाद ही कोई संस्थान इस तरह मुस्कुरा सकता है| सहस्त्रों कर्मयोगियों की तपस्या, अनुशासन, इच्छाशक्ति और दूरदृष्टि का परिणाम का स्वरुप कैसा हो सकता है और वह गाथा कैसी, यह अब मेरे लिए स्पष्ट होता जा रहा था| मैंने देखा कि किस प्रकार आज उठाया गया एक नन्हा कदम आगे आने वाली पीढ़ियों की पूरी जिंदगी ही पलट के रख देता है|

मेरी बातों में मत बहिए, और हाँ! सिर्फ 'इतिहास' ही नहीं है आगे के पृष्ठों पर, भला हमारा 'आज' भी कम प्रासंगिक तो है नहीं| फिर 'वर्तमान' अपनी जगह कैसे छोड़ देता? कल और आज के इसी संगम की एक बहुत छोटी सी झलक है: 'वाणी 2014'| चलिए निकलते हैं इस नन्हें सफ़र पर.....

अनिरुद्ध, राजेश

2014

झल

कियां

-राहुल जैन

1964

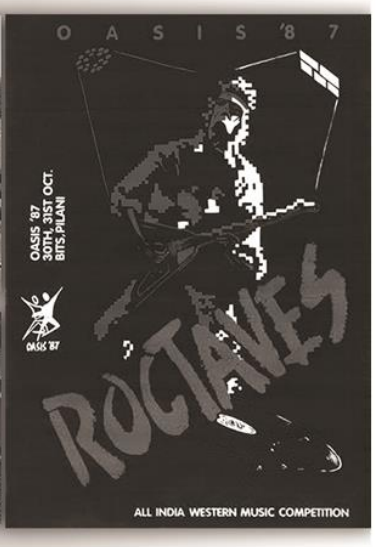

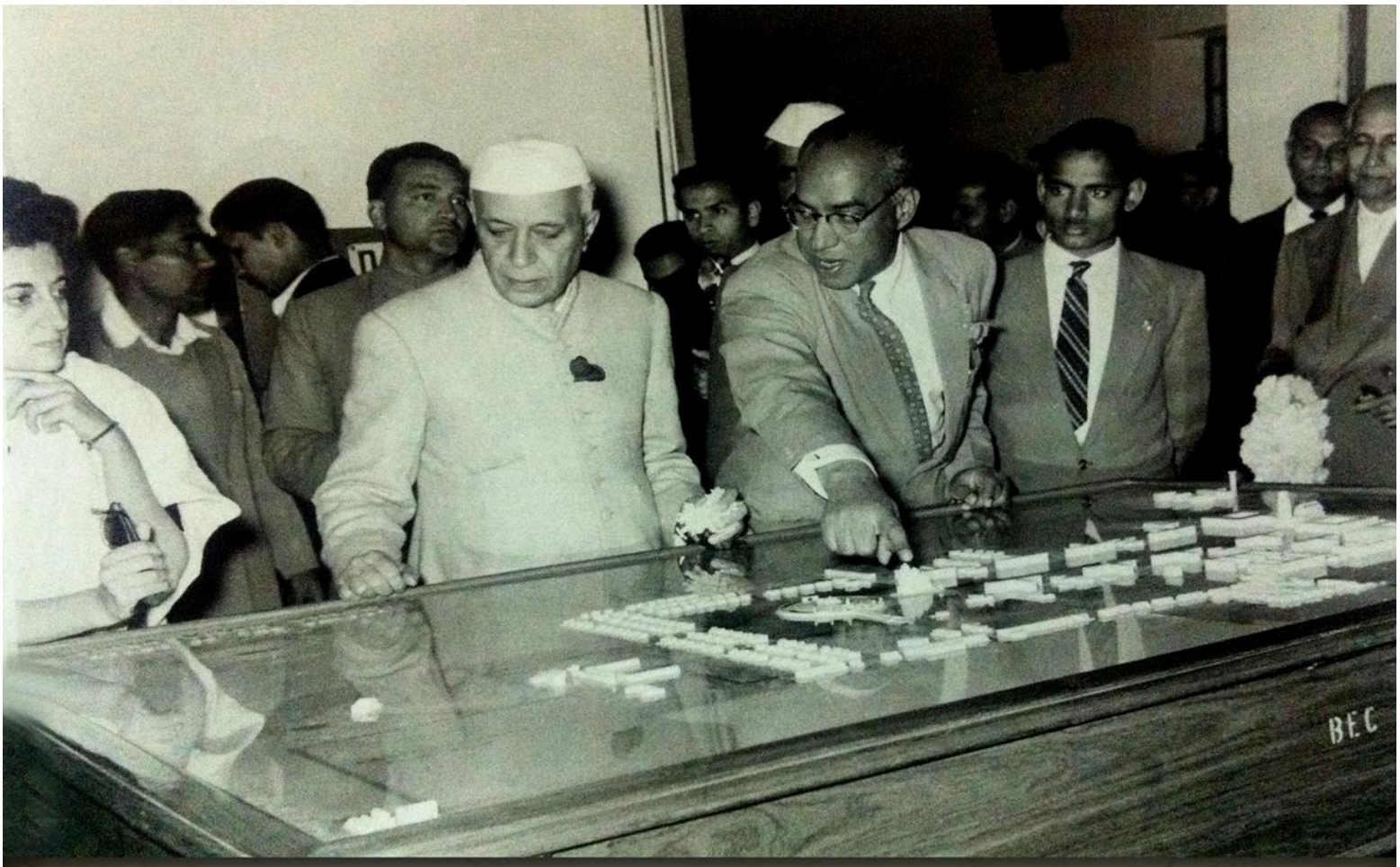

पं. नेहरु व इंदिरा को बिट्स परिसर से अवगत कराते श्री घनश्याम दास जी बिड़ला

बिट्स : इतिहास के पन्नों से

–अनिरुद्ध, आवेश, प्रियंक, मुद्रिका

जिंदगी में जब हम किसी वरिष्ठ और विद्वान व्यक्ति को देखते हैं तो हमें शायद ही कभी अहसास होता है कि ये महाशय भी कभी इतने छोटे रहे होंगे कि इन्हें भूख लगने को अपनी पतली और बड़ों की नींद हराम कर देने वाली आवाज़ में रोकर बताना पड़ता था| वट-वृक्ष के समान विशाल हमारा आज का '**बिट्स पिलानी**' भी कभी ऐसे ही एक नन्हें पौधे की तरह हुआ करता था| इस पौधे का बीजारोपण तब हुआ जब श्री घनश्याम दास जी के पिता 'शिव नारायण जी' ने अपने पौत्रों को प्रारंभिक शिक्षा देने के लिए **सन् 1901** में विद्या की देवी माँ सरस्वती के जन्मोत्सव के पावन दिन "**वसंत पंचमी**" पर एक पाठशाला की आधारशिला रखी थी| बिट्स का स्थापना दिवस "वसंत पंचमी" के दिन मनाए जाने का भी यही कारण है| इस संस्थान के उस पाठशाला से आज के बिट्स बनने तक के इस जीवन संघर्ष में कई उतार-चढ़ाव आए| कई छोटी-बड़ी सफलताओं के बाद आज के बिट्स का रूप निखर पाया| यह नन्हीं सी पाठशाला सन् 1925 तक आते-आते एक हाईस्कूल में बदल चुकी थी जिसने सन् 1929 में इंटरमीडिएट कॉलेज का रूप धारण कर लिया था|

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन 'शारदा पीठ' का भूमि पूजन करते हुए

शिक्षा का यही केंद्र क्रमशः सन् 1943 में 'स्नातक महाविद्यालय', सन् 1947 में 'परास्नातक महाविद्यालय', सन् 1952 में **'बिरला कला महाविद्यालय(Birla College of Arts)'** तथा **'बिरला वाणिज्य, औषध एवं विज्ञान महाविद्यालय(Birla College Commerce,Pharmacy and Science)'** का विस्तृत रूप ले चुका था| ऐसा लग रहा था कि इस संस्थान ने अपनी तरुणावस्था को प्राप्त कर लिया हो| लेकिन तभी द्वितीय-विश्व युद्ध के काले बादल इस संसार में मंडराने लगे| आयुध निर्माण हेतु द्वितीय विश्वयुद्ध के समय **'आर.आई.एन.आर्टिफिसर्स ट्रेनिंग केंद्र'** नामक एक संस्थान पिलानी में स्थापित किया गया| युद्ध के पश्चात् इसे श्री घनश्याम दास जी ने सुव्यवस्थित **'बिरला अभियांत्रिकी महाविद्यालय(Birla College of Engineering)'** में परिवर्तित कर दिया था| ये तीनों महाविद्यालय देश के कोने-कोने में अपना यश बिखेरने लगे और देश की आजादी के साथ जल्द ही इन संस्थानों की कीर्ति अंतरराष्ट्रीय सीमाओं को तोड़ती हुई सात समुन्दर पार देशों में अपना यशोगान करने लगी| ये कहना गलत नहीं होगा कि आज के 'बिट्स पिलानी' के वैभवपूर्ण स्वरुप के पीछे इस धनी विरासत का अविस्मरणीय योगदान रहा है| बिट्स के इतिहास के पन्ने पलटते समय हमें एक बात स्पष्टतः दिख गई कि एक कर्मयोगी के अथक प्रयासों के बिना इस संस्थान की कल्पना करना भी बेईमानी ही है| महाभारत के 'भीष्म-पितामह' की तरह ही **'घनश्याम दास जी बिड़ला'** नामक एक कर्मयोगी इस बिट्स रुपी वृक्ष को निरंतर अपने अथक प्रयासों से सींचता रहा| अब हमारे इस "बिरला प्रोद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान, पिलानी" के जन्म की अनुकूल परिस्थितियाँ बन चुकी थीं| तीनों महाविद्यालयों को मिलाकर एक ऐसे 'विश्वविद्यालय' में परिवर्तित करने का विचार श्री घनश्याम दास जी बिड़ला कर चुके थे जो भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में मार्गदर्शक और एक प्रकाश स्तम्भ की तरह हो| एक शाम पिलानी आकर अपनी पैतृक हवेली में उनका यही विचार एक उद्घोष के रूप में सबके सामने आया- **"वर्तमान में पिलानी में उपस्थित तीन विभिन्न महाविद्यालयों को मिलाकर एक विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय का रूप दिया जायेगा, जो कि अमेरिका के सुविख्यात 'एम.आई.टी.' की तर्ज पर संचालित होगा|"**

द्वितीय दीक्षांत समारोह

इसी उद्घोष के साथ वह गौरवपूर्ण कहानी शुरू होती है जिसमें हम सभी बिट्सियंस छोटी-छोटी कलमों की तरह इस कहानी को आज भी लिखते हुए विस्तृत एवं और अधिक गौरवपूर्ण बनाने में जाने-अनजाने लगे हुए हैं| शुरू होती है वो कहानी जो आज हमें **'बिट्स पिलानी - इट्स मैजिक'** कहकर चार लफ्जों में ही बता दी जाती है और हमारे वरिष्ठ एवं पूर्व छात्र उस 'मैजिक' के अनुभव हमसे बाँटा करते हैं; शुरू होती है वह कहानी जिसमें हम सबकी जिंदगी के अविस्मरणीय वर्ष तो छिपे हुए हैं ही, साथ ही साथ जो हमारे शेष जीवन की दिशा तय करने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है|

बिट्स का आज का स्वरुप देखकर लगता है कि उस दिन घनश्याम दास जी मानो भविष्यवाणी ही कर रहे थे| बिट्स के निर्माण के लिए घनश्याम दास जी ने उस समय **1.5 करोड़** की राशि दान की तथा शेष धनराशि '**फोर्ड फाउंडेशन**' ने उपलब्ध कराई| तत्पश्चात् '**एम.आई.टी.**' से कई प्राध्यापकों तथा अधिकारियों के समूह ने पिलानी में कई दिन का डेरा डाला तथा वे एम.आई.टी. के जैसी ही ठोस नींव भारतवर्ष की भूमि पर बनाने में लग गए और उनके वही प्रयास एवं घनश्याम जी की इच्छाशक्ति आज बिट्स पिलानी के रूप में सबके सामने है|

शिक्षा-दीक्षा:

बिट्स आज इस संसार में अपनी बेहतर शिक्षा के लिए जाना जाता है और इसलिए बिट्स के इस पहलू पर ध्यान दिए बिना आगे बढ़ना निरर्थक ही होगा|

पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन-प्रक्रिया सुधार: उस समय परीक्षाओं में पुस्तक खोलना नक़ल करने के समान माना जाता था, परन्तु **सत्तर** के दशक में बिट्स ने शैक्षणिक सुधारों की तरफ एक ऐतिहासिक कदम बढ़ाते हुए सन् 1964 से ही परीक्षा के कुछ हिस्सों में पुस्तक खोलने की अनुमति

छात्रों को दे दी थी जिसमें उस भाग के कुल अंको का 10 फीसदी लाना अनिवार्य था| इसी दशक में सन् 1969 में बिट्स को अपना **पहला कंप्यूटर** भी प्राप्त हुआ जिसका अध्ययन प्राथमिक स्तर पर अनिवार्य कर दिया गया था| औद्योगिक क्षेत्र से छात्रों को बेहतर ढंग से रूबरू कराने हेतु **'प्रैक्टिस स्कूल'** सन् 1973 में अस्तित्व में आया| अपनी इच्छानुसार समय सारणी के इस अनोखे रूप का प्रथम आगमन अस्सी के दशक में हुआ जो 90 के दशक तक पूरी तरह से विकसित हो चुका था| छात्रों के निरंतर शैक्षणिक विकास पर सदैव नजर बनाए रखने के लिए टेस्ट्स तथा अकस्मात परीक्षा लेने की शुरुआत सन् 1970 में हो चुकी थी| वर्ष 1980 में पूर्व से चले आ रहे 5 वर्षों के पाठ्यक्रमों की अवधि(मुख्यतः एम.एस.सी.) घटाकर 4 वर्ष कर दी गयी| इस दिशा में यह देश में पहला परिवर्तन था| बिट्स के इस परिवर्तन का अनुसरण बाद में आई.आई.टी. सहित देश के कई नामी गिरामी संस्थानों ने किया|

बिट्स वर्कशॉप

विद्यार्थी चयन-प्रक्रिया और मूल्यांकन शैली: सत्तर के दशक से पूर्व बिट्स में दाखिला भिन्न-भिन्न विभागों की आवश्यकतानुसार हुआ करता था और उसकी चयन प्रक्रिया में भी उस विभाग की ही अहम भूमिका हुआ करती थी परन्तु वर्ष 1971 से इस प्रक्रिया में बदलाव लाते हुए दाखिले की प्रक्रिया को केंद्रीकृत कर दिया गया जो आज तक कायम है| यह तो रही दाखिले की बात परन्तु जब हम परीक्षाओं में सफल होने की बात करते हैं तो ऐसा लगता है कि पहले शायद आज के मुकाबले काफी कड़े नियम थे; जैसे कि सन् 1968 तक अगले स्तर में प्रोन्नति के लिए परीक्षाओं में **कम से कम 40 प्रतिशत** अंक लाना अनिवार्य था| बाद में इसे बढ़ाकर **45 प्रतिशत** कर दिया गया था| जब सेमेस्टर पाठ्यक्रम की योजना लागू की गई तो 45 प्रतिशत के नियम को परिवर्तित करके ग्रेड पैमाने पर औसत कम से कम 4.5 लाना अनिवार्य कर दिया गया था| जो भी छात्र लगातार 2 सेमेस्टर्स में इस सीमा को पार करने में नाकाम साबित होता था उसे 2 सेमेस्टर्स के लिए निलंबित कर दिया जाता था|

बिट्स-पुस्तकालय : सन् 1968

बिट्स-पुस्तकालय: बिट्स के पुस्तकालय का इतिहास भी काफी रोचक है| बिट्स के पुराने पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 1948 में हुई थी; परन्तु सन् 1964 में बिट्स पिलानी के अस्तित्व में आने के बाद पुस्तकालय के ढाँचे में आमूलचूल परिवर्तन करते हुए संपूर्ण स्वरुप को एम.आई.टी. के सुप्रसिद्ध पुस्तकालय की तर्ज़ पर बदलने का कार्य शुरू कर दिया गया था|

इस सुधार हेतु अमेरिका से बकायदा 5 प्राध्यापकों के दल ने बिट्स पिलानी के परिसर में प्रवास लेकर इस संपूर्ण परिवर्तन को अंजाम दिया था| इस दौरान सन् 1967 से लेकर 1971 तक की समयसीमा में पुस्तकालय के सुधार पर प्रतिवर्ष 5200 डॉलर से लेकर 12800 डॉलर खर्च हुआ, जो बिट्स में वार्षिक खर्च के 5% से अधिक रहता था|

जब शुल्क-वृद्धि को लेकर बिट्स में हुई हड़ताल: वर्ष 1980- 90 के दौरान बिट्स का प्रति सेमेस्टर शैक्षणिक शुल्क मात्र 750 रुपये हुआ करता था| रोचक बात यह है कि इससे पहले यह मात्र 500 रुपये प्रति सेमेस्टर थी जिसे सन् 1980 में संशोधित कर बढ़ाया गया था| जब सन् 1980 सन् में 500 रुपये के शुल्क को बढ़ाकर 700 रुपये किया गया तो इस वृद्धि को लेकर छात्रों में काफी रोष देखा गया| इस शुल्क वृद्धि के खिलाफ छात्रों ने धरना दिया तथा अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चले गए जिससे उस सेमेस्टर की पढ़ाई बाधित हुई तथा वह सेमेस्टर मई में अंत होने के बजाय जुलाई में खत्म हुआ|

"सिद्धार्थ" का परचम : डॉ. ए.पी. माथुर तथा डॉ. पी. ध्यानी ने वर्ष 1981 में इस **देश का पहला बहुभाषी कंप्यूटर** निर्मित किया था| इस कंप्यूटर की खास बात यह थी की यह **देवनागरी लिपि** को भलीभाँति पहचान सकता था| इस कंप्यूटर का नाम उन्होंने '**सिद्धार्थ**' दिया था| उस समयकाल में सिद्धार्थ देश-विदेश में चर्चा का विषय बना और इसने बिट्स को एक अलग पहचान भी दिलवाई|

हमारे संस्थान की तकनीकी गुणवत्ता से प्रभावित होकर पश्चिम बंगाल की सरकार ने एक अत्यंत ही ऐतिहासिक कदम उठाते हुए अपने पॉवर प्लांट के कर्मचारियों को प्रशिक्षण हेतु प्रथम बार देश के किसी निजी शिक्षण संस्थान में भेजा था, जो कि निश्चित रूप से देश में बिट्स की बढ़ती लोकप्रियता का प्रमाण था| सन् 1985 में बिट्स ने विश्वभर के जाने-माने तकनीकी संस्थानों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित एक सेमीनार में कुल 13 प्रोजेक्ट्स प्रस्तुत किए जिससे बिट्स की साख न केवल देश में अपितु विदेशों में भी आसमान छूने लगी| यह घटना 'बिट्स' को तकनीकी संसार में एक अहम स्थान दिलवाने की दृष्टि से सबसे महत्त्वपूर्ण मानी जाती है|

बदलती जरूरतों के साथ बदलती शिक्षा संरचना: इन विभिन्न उपलब्धियों ने जहाँ देश-विदेश में 'बिट्स' को तकनीकी संस्थान के रूप में जहाँ चर्चा के केंद्र में ला दिया था वहीं बिट्स प्रशासन अपने छात्रों को औद्योगिक क्षेत्र में दक्ष बनाने हेतु एक के बाद एक विभिन्न उद्योग केन्द्रों से समझौते कर रहा था, तो वहीं उच्च शिक्षा हेतु विदेश संस्थानों से संपर्क बढ़ाने के लिए हर वर्ष औसतन 10 शिक्षण संस्थानों के साथ विभिन्न समझौतों पर हस्ताक्षर कर रहा था| वर्ष 1981 से

दौरान बिट्स ने प्रैक्टिस स्कूल हेतु कुल 22 उद्योग केन्द्रों को जोड़ा वहीं कुल 10 विदेशी महाविद्यालयों से संपर्क साधा| नब्बे के दशक के आखिरी वर्षों में सूचना प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ-साथ बिट्स ने दूरगामी कदम उठाते हुए ***दूरशिक्षा*** के क्षेत्र में सफलता पूर्वक प्रवेश किया जो आज की बदलती जरूरतों के लिए ठीक उपयुक्त साबित हो रही है| बीसवीं शताब्दी के आखिरी वर्षों में बिट्स-प्रशासन अपने परिसर में संचालित पाठ्यक्रमों में प्रसार तो कर ही रहा था, साथ-ही-साथ पाठ्यक्रम-गुणवत्ता बढ़ाने पर भी खास ध्यान दे रहा था| इसके साथ 'छात्र-शिक्षक अनुपात' को एक आदर्श स्थिति तक पहुँचाने के लिए नए प्राध्यापकों की संख्या बढ़ाने के साथ-साथ उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था '**एम.आई.टी.**' जैसे विश्व के सर्वाधिक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में सुनिश्चित की गई|

जीव-विज्ञान विभागाध्यक्ष सापों से लौह पुरुष 'सरदार पटेल' जी का मनोरंजन करते हुए (23-28 दिसम्बर सन् 1948)

प्लेसमेंट्स: आज बिट्स के लगभग सभी छात्र शिक्षावधि पूर्ण होते ही एक सम्मानित रोजगार पा लेते हैं, परन्तु क्या आप जानते हैं कि इस प्रक्रिया की शुरुआत सर्वप्रथम अस्सी के दशक में हुई थी जिसमें **पहली बार कुल 200 छात्रों में से मात्र 26** छात्र ही रोजगार प्राप्त कर पाए थे| पिछले कुछ वर्षों ने रोजगार पाने की प्रतिशतता 90 के पार भी पहुँच चुकी है और ख़ुशी की बात यह है कि अगर इस क्रम को एक बड़े अन्तराल पर देखा जाए तो यह निरंतर बेहतरी के रस्ते पर अग्रसर है| इस दिशा में बिट्स के प्राचीन छात्रों का संगठन "बिट्सा" भी विशेष योगदान दे रहा है|

मौज-मस्ती इन बिट्स:

निश्चित रूप से एक आम बिट्सियन के लिए मौज-मस्ती का पर्याय यहाँ के 'उत्सव' ही हैं| यहाँ की संस्कृति के अभिन्न अंग और विभिन्न रुचियों-कौशलों को ज़ारी रखने के माध्यम अनेक 'क्लब-डिपार्टमेन्ट्स' मौज-मस्ती के छोटे-छोटे अड्डों के जैसे हैं और इन 'अड्डों' का वजूद और इनकी गतिविधियाँ इन उत्सवों के चारों ओर ही घूमती रहती हैं| अतः उत्सवों की स्थिति मौज-मस्ती के क्षेत्र में काफी स्पष्ट है|

महोत्सव इन बिट्स: बिट्स के सांस्कृतिक महापर्व '**ओएसिस**' की परिकल्पना सन् 1969 में सामने आई और इस पर अमल के बाद यह पहली बार सन् 1971 में आयोजित किया गया| वहीं तकनीकी महापर्व '**अपोजी**' का आयोजन सन् 1989 से प्रारंभ हुआ|

उस समय काफी लघु स्तर पर आयोजित इन महापर्वों के स्वरुप में समय के साथ आए बदलाव के बाद स्थिति कुछ ऐसी है कि "ओएसिस" को प्रतिभागिता के दृष्टि से देश का दूसरा सबसे बड़ा सांस्कृतिक महोत्सव माना जाता है| तकनीकी महोत्सव 'अपोजी' भी पीछे नहीं है और इसे भी देश में काफी ख्याति प्राप्त है| 'बिट्स' के अस्तित्व में आने के बाद खेल-कूद में यहाँ के छात्रों ने कई बार राज्य की टीम में जगह बनाई| इसी परंपरा को बनाए रखने के लिए **वर्ष 1978 में बिट्स ने सर्वप्रथम क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का आयोजन** किया जिसमें आस-पास के क्षेत्रीय महाविद्यालयों के छात्रों की अच्छी-खासी संख्या में उपस्थिति देखने को मिली| इसे आज के "बॉसम" का प्रारंभिक रूप माना जाता है| इसी वर्ष 23 जनवरी को बिट्स में 'पंडित रविशंकर' तथा 'उस्ताद अल्लारखाँ' ने अपनी प्रस्तुति दी जिसे देश भर की मीडिया का अच्छा खासा कवरेज मिला| अगले वर्ष सन् 1979 में मशहूर शहनाई वादक भारत रत्न 'उस्ताद बिस्मिल्ला खान' ने परिसर

में अपनी सम्मोहक प्रस्तुति दी| उस समय बिट्स परिसर के बाहर रहने वाले आम नागरिकों को भी इन आयोजनों का लुत्फ़ उठाने का मौका मिलता था| सन् 1981 में ओएसिस के अवसर पर मशहूर गायक '**मन्ना डे**' की प्रस्तुति देखने के लिए पूरा पिलानी उमड़ पड़ा था| वर्ष 1985 में बिट्स में स्थापित '**ग्लाइडिंग क्लब**' को भारत सरकार के उपक्रम '**एयरो क्लब ऑफ इंडिया**' से प्रमाणित सदस्यता की प्राप्ति हुई जो बिट्स के लिए एक अनोखी उपलब्धि सिद्ध हुई|

इस क्लब से प्रतिवर्ष औसतन 5 से 8 छात्र अपनी पढ़ाई करते हुए ग्लाईडिंग लाइसेंस भी प्राप्त कर लेते थे| उदाहरण के तौर पर सन् 1969 में बिरला ग्लाइडिंग क्लब से कुल **2396** उड़ाने भरी गईं और 6 'विद्यार्थी चालक' और 3 'ग्लाइडर चालक' लाइसेंस भी अर्जित किए गए| ग्लाइडिंग के अतिरिक्त सामान्य वाहन चलाने का प्रशिक्षण भी बिट्स में मिला करता था| इसी वर्ष NCC द्वारा 150 ड्राइविंग लाइसेंस छात्रों के प्रशिक्षण के बाद प्रदान किए गए थे| बिट्स की '**राष्ट्रीय एकता समिति**' तथा '**राष्ट्रीय सेवा योजना**(NSS)' के तत्वाधान में बिट्स में रक्तदान शिविर सन् 1981 से ही आयोजित हो रहा है| रक्तदान शिविर के अलावा बिट्स के विद्यार्थी अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहन काफी गंभीरता से करते आ रहे हैं| सत्तर के दशक में आन्ध्र प्रदेश में आए तूफ़ान के दौरान राहत कार्य हेतु बिट्स से 50 छात्रों का दल रवाना हुआ था|| यह दल अपने कार्य के प्रति समर्पण को लेकर देश विदेश में चर्चा का विषय बना| वर्ष 1986 में बिट्स ने ब्रिटेन के '**नेपियर कॉलेज**' के साथ एक समझौता किया जिसके तहत यहाँ के विद्यार्थी नेपियर कॉलेज में जाकर लघु अवधि के लिए अध्ययन कर सकते थे|

जयपुर स्टेट के प्रधानमंत्री के साथ घनश्याम दास जी बिड़ला
(सन् 1943)

जब 'बिट्स' की आँखें भर आईं:

बिट्स के संस्थापक तथा परम पूज्यनीय घनश्याम दास जी का देहावसान **वर्ष 1983** में हो गया| घनश्याम दास जी के निधन के समाचार से संपूर्ण बिट्स में शोक की लहर दौड पड़ी और साथ ही 'कुलपति' का पद रिक्त हो गया| कमलकांत जी को बिट्स का कुलपति नियुक्त किया गया| घनश्याम दास जी के सम्मान में शारदापीठ के ठीक सामने घनश्याम दास जी की एक प्रतिमा वर्ष 1985 में स्थापित की गई| वर्ष 1986 का बॉसम घनश्याम दास जी के स्मृति में आयोजित किया गया और इस खेल प्रतियोगिता में देश के कुल 35 विभिन्न महाविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया| 1986 में ही आयोजित रक्तदान शिविर ने एक नया कीर्तिमान रचते हुए देश के समस्त संस्थानों में सर्वाधिक रक्त इकाई एकत्र करने का यश प्राप्त किया|

रजत जयंती वर्ष:

वर्ष 1990 में बिट्स का रजत जयंती समारोह मनाया गया जो कि 21 जनवरी 1990 से प्रारंभ होकर 9 सितम्बर 1990 तक चला| समापन समारोह में देश के **राष्ट्रपति माननीय आर. वेंकटेश्वरन** ने मुख्य अतिथि के रूप में पधार कर समारोह की गरिमा बढ़ायी| अपने भाषण में राष्ट्रपति जी ने बिट्स के शिक्षा के क्षेत्र में किये गए नवीन प्रयासों की सराहना की तथा इसके तरोताजगी से परिपूर्ण वातावरण, छात्रों के व्यवहार तथा प्राध्यापकों के योग्यता के कायल हो गए| इसी वर्ष राष्ट्रपति जी ने '**सीरी(CEERI)**' का भी उद्घाटन किया|

कुछ बातें यूं ही:

'बिट्स तरणताल (स्वीमिंग पूल)' सन् 1968 में 1.5 लाख रूपए की लागत से बना| इसी वर्ष विद्यार्थियों को अपनी पढ़ाई पूरी करने के उपरांत दिया जाने वाला प्रमाणपत्र हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी दिया जाने लगा था| वर्ष 1969 को बिट्स में **'शिक्षा सुधारों के वर्ष'** के रूप में जाना जाता है| पहले 16 वर्ष से कम आयु के व्यक्ति का बिट्स में प्रवेश की मनाही थी जिसे इस वर्ष परिवर्तित कर दिया गया था| इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स, दोनों को मिलाकर एक ही विभाग में बदल जो दिया गया था और बिट्स में प्रवेश के लिए परीक्षा का प्रारंभ कर दिया गया था| IPC का पहला कंप्यूटर भी इसी वर्ष आया था| बिट्स में **"छात्र-न्यायलय"** के अनोखे विचार पर इसी वर्ष प्रयोग किया गया था| सन् 1970 में बिट्स के BODs का चयन भारत सरकार और AICTE की देख-रेख में होना शुरू हो गया था| सभी स्नातक विद्यार्थियों के लिए 90 कोर्सेज को सबके लिए पढ़ना अनिवार्य कर दिया गया जिसे मजबूत शैक्षिक नींव के लिए अतिमहत्त्वपूर्ण माना जाता है| एमएससी. जीवविज्ञान एवं एमएससी. वनस्पति विज्ञान, दोनों का 'एमएससी. जैव-विज्ञान' में परिवर्तन भी इसी वर्ष में उठाया गया कदम था| इस वर्ष के दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि रहे भारत के पूर्व मुख्य न्यायधीश **'श्री एस. आर. दास'** जी का ओजस्वी वक्तव्य आज भी उन लोगों याद है जो उस समय ऑडिटोरियम में मौजूद थे| सन् 70 में ही 'हिंदी वाद-विवाद' क्लब द्वारा आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता को देश भर की पत्रिकाओं द्वारा काफी सराहा गया था| भयावह मानसून के बाद सन् 1978 में राजस्थान शिक्षा मंत्रालय के लिए NSS अधिकारियों को बिट्स ने प्रशिक्षण दिया था और केन्द्रीय संग्रहालय को **'बिरला संग्रहालय'** में परिवर्तित कर दिया गया था|

बिट्स परिसर के निवासियों को एक ही छत के नीचे बाजार के मुकाबले कम दाम पर दैनिक उपयोग की लगभग सभी आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध करवाने वाले **'अक्षय'** प्रतिष्ठान का शुभारंभ सन् 1984 में हुआ था|

वर्ष 1992 के अपोजी के दौरान संस्थान ने कुछ छात्रों की मदद से पूरे परिसर में 8 रंगीन टेलेविज़न की व्यवस्था की थी जिसके चलते कहीं भी घटित होने वाली घटनाओं का सीधा प्रसारण हो सकता था| इसी वर्ष परिसर में **'शिवगंगा'** नामक स्थान का निर्माण हुआ तथा शिव जी के मूर्ति की स्थापना हुई| वर्ष 1996 के पश्चात् में बिट्स की बढ़ती अंतर्राष्ट्रीय लोकप्रियता के कारण बिट्स ने अपने परिसर का विस्तार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर करना शुरू कर दिया| **वर्ष 2000 में दुबई में अपना दूसरा परिसर स्थापित करने के साथ ही बिट्स को देश का ऐसा पहला विश्वविद्यालय बनने का गौरव प्राप्त हुआ जिसका कोई परिसर विदेश में स्थापित हुआ हो|**

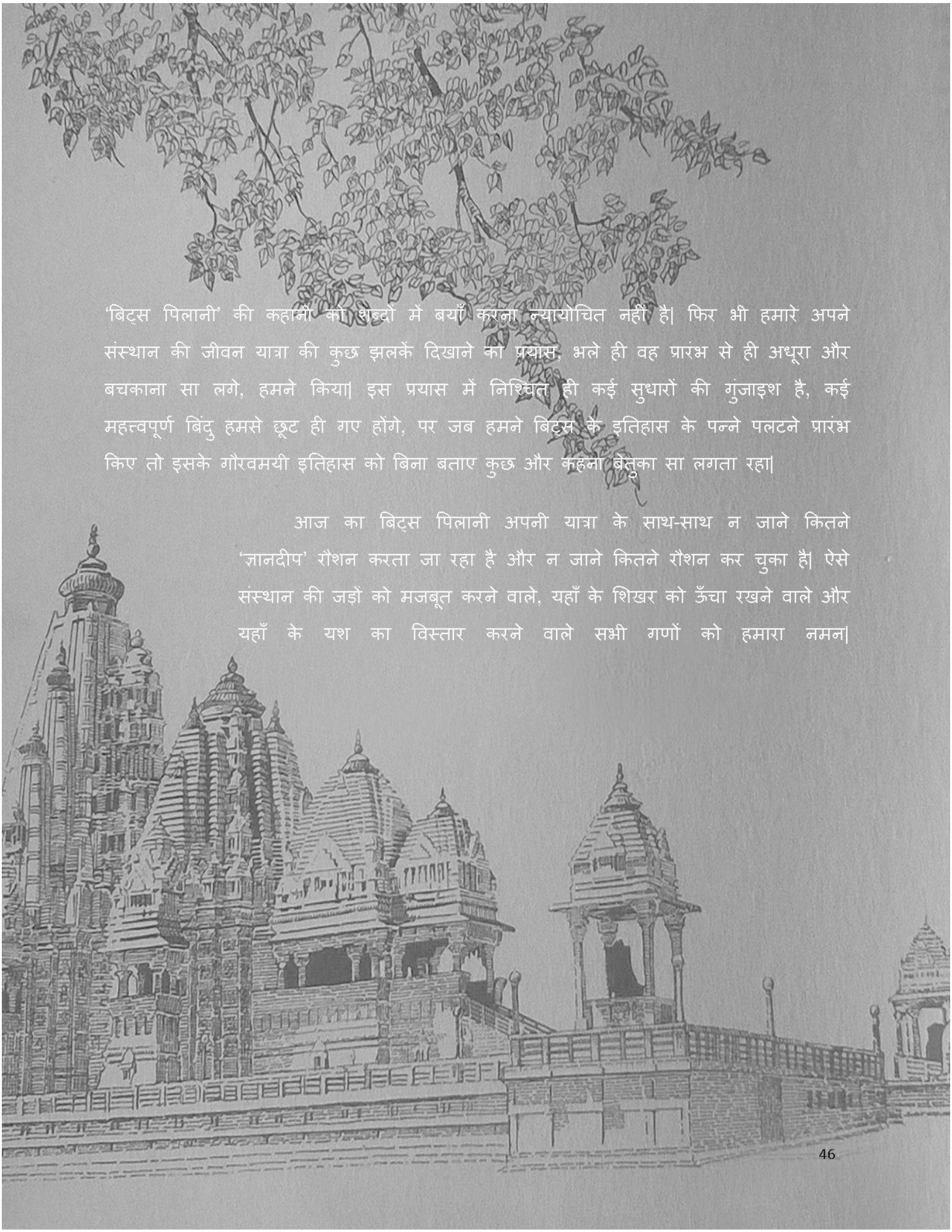

'बिट्स पिलानी' की कहानी को शब्दों में बयाँ करना न्यायोचित नहीं है| फिर भी हमारे अपने संस्थान की जीवन यात्रा की कुछ झलकें दिखाने का प्रयास, भले ही वह प्रारंभ से ही अधूरा और बचकाना सा लगे, हमने किया| इस प्रयास में निश्चित ही कई सुधारों की गुंजाइश है, कई महत्त्वपूर्ण बिंदु हमसे छूट ही गए होंगे, पर जब हमने बिट्स के इतिहास के पन्ने पलटने प्रारंभ किए तो इसके गौरवमयी इतिहास को बिना बताए कुछ और कहना बेतुका सा लगता रहा|

आज का बिट्स पिलानी अपनी यात्रा के साथ-साथ न जाने कितने 'ज्ञानदीप' रौशन करता जा रहा है और न जाने कितने रौशन कर चुका है| ऐसे संस्थान की जड़ों को मजबूत करने वाले, यहाँ के शिखर को ऊँचा रखने वाले और यहाँ के यश का विस्तार करने वाले सभी गणों को हमारा नमन|

तस्मै श्री गुरुवे नमः

–प्रवीण गोद्रित

प्रो एस.के. शर्मा: कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी अगर कहा जाये कहा जाए कि प्रो. एस.के. शर्मा बिट्स पिलानी को एक बहुत बड़ी देन हैं| वे अस्सी के दशक में बिट्स पिलानी से जुड़े और उसके बाद उन्होनें अपना पूरा जीवन बिट्स पिलानी के भौतिकी विभाग की सेवा में समर्पित कर दिया| उन्होनें बिट्स पिलानी की भौतिकी प्रयोगशाला (Phy Lab) की व्यवस्था की |उनकी गिनती बिट्स के ऐसे शिक्षकों में की जाती है जिनके कक्ष में हमेशा छात्रों की भीड़ लगी रहती थी| प्रो.एस.के.शर्मा 'डिजिटल और एनालॉग इलेक्ट्रॉनिक्स' के सुविख्यात जानकार रहे हैं| सीरी (CEERI) के वर्त्तमान निदेशक चंद्रशेखर भी उनके शिष्य रह चुके हैं| अभी वे आगरा में हैं| आज भी वे छात्रों के प्रिय हैं|

प्रो. कृष्ण मोहन - बिट्स पिलानी में अपना कार्यकाल अक्तूबर 1961 (तब के बिरला कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग) में एक अंग्रेज़ी व्याख्याता के रूप में प्रारंभ करने वाले प्रो. कृष्ण मोहन जी ने 40 वर्षों तक इस संस्थान की नींव मजबूत करने का कार्य किया| वे 1966 में सहायक प्रोफेसर और 1990 में प्रोफेसर बने| उन्होनें 1981 से लेकर 1998 तक विज्ञानेतर विषय के विभागाध्यक्ष के रूप में 17 वर्षों तक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया| 1966 में देश की पहली भाषा प्रयोगशाला (language lab) बिट्स पिलानी में स्थापित होने का श्रेय उन्हीं को जाता है| प्रो. कृष्ण मोहन जी 13 वर्षों तक "बिरला विद्या विहार बुलेटिन" के संपादक भी रहे| बिट्स पिलानी में अभ्यास सत्र की प्रवृत्ति शुरू करने में भी इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है|

कृष्ण मोहन जी 7 किताबों के संपादक और 5 किताबों के लेखक रह चुके हैं| इन्होनें इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन,यूनिवर्सिटी ऑफ लंडन से ELT में विशेष योग्यता हासिल की है| 83 वर्ष की उम्र में साइकिल चलाते हुए प्रो. कृष्ण मोहन अभी भी कैम्पस में देखे जा सकते हैं|

प्रो एच. एस. मूंडरा—बिट्स पिलानी के सिविल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट को हमेशा से ही बहुत अनुभवी शिक्षक मिलते रहे हैं| उन्हीं कई नामों में एक नाम है प्रो एच. एस. मूंडरा का| प्रोफेसर मूंडरा यहाँ डिज़ायन कोर्सेज़, विशेषतया मेकॅनिक्स ऑफ सॉलिड्स कुछ इस अंदाज़ में पढ़ाते थे कि छात्र जमीन पर बैठकर भी उनके लेक्चर में उपस्थित होते थे| अपने कार्यकाल में वो चीफ ऑफ मैन्टैनेंस रह चुके प्रो मूंडरा ने अपनी रियल टाइम प्रोजेक्ट्स में रूचि को मूर्त रूप दिया है। बिट्स पिलानी के गोवा कैम्पस के निर्माण में प्रो. मूंडरा का योगदान अविस्मरणीय रहा है| मीरा भवन, अक्षय, एल. टी. सी. , बिट्स पुस्तकलय , SAC ,मालविया मेस का निर्माण प्रोफेसर मूंडरा की देख-रेख में ही हुआ| उनका कार्यकाल जनवरी 2009 में समाप्त हुआ|

प्रो लक्मीकांत माहेश्वरी

बिट्स इलेक्ट्रॉनिक्स में प्रो लक्मीकांत माहेश्वरी का नाम अपने आप में एक अमिट छाप है। बिट्स में सन 1971 से अपना सफर शुरू करने वाले प्रो. माहेश्वरी के प्रयास और दूरदर्शिता का ही परिणाम है कि आज सेमीकंडक्टर इलेक्ट्रॉनिक्स में बिट्स पिलानी अपनी एक अलग पहचान रखता है। शिक्षण के प्रति इनका रुझान इसी बात से चलता है कि जब भी वे बिट्स में आते हैं तो छात्रों की एक कक्षा ज़रूर लेते हैं| इलेक्ट्रॉनिक्स की सीनियर फैकल्टी में अधिकतर प्राध्यापकगण प्रो. माहेश्वरी के साथ अध्ययन किए हुए हैं| इलेक्ट्रॉनिक्स की 4 किताबें लिखने के साथ-साथ इनके 60 से ज्यादा शोध-पत्र राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस और पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। वे बिट्स पिलानी के उप-कुलपति भी रह चुके हैं |EEE,E&I के छात्रों में इलेक्ट्रॉनिक्स के प्रोजेक्ट्स में प्रोत्साहन के लिए इन्होनें एल.के माहेश्वरी फाउंडेशन की स्थापना की। यह फाउंडेशन न केवल प्रोजेक्ट्स को आर्थिक सहायता प्रदान करता है बल्कि बिट्स के बाहर किसी कांफ्रेंस, प्रतियोगिता में जाने के लिए छात्रों को आर्थिक मदद भी करता है।

'डीन नट्टू' : डॉ. बी.आर. नटराजन जी बिट्स पिलानी के छात्रों के सबसे प्रिय अध्यापकों में से एक रह चुके हैं| 'डीन नट्टू' के नाम से जाने जाने वाले नटराजन जी ने अपने जीवन का एक मुख्य एवं महत्त्वपूर्ण अंश बिट्स में व्यतीत किया है| फेसबुक पर अधिकतम फ्रेंड्स का कोटा पार कर चुके डीन नट्टू किसी भी बिट्सियन के आगे 'अ प्राउड बिट्सियन' लगाना नहीं भूलते। अपने कार्यकाल में किसी न किसी विभाग के डीन रहने के कारण इनका नाम डीन नट्टू ही हो गया। | उन्होनें रसायनिक संकाय से अपनी इंजिनियरिंग बिट्स से की| उसके बाद उन्होनें इसी क्षेत्र में उच्च अध्ययन भी बिट्स पिलानी से ही किया| अपनी पी.एचडी. पूरी करने के पश्चात उन्होनें बिट्स पिलानी में शिक्षण का विकल्प चुना और रसायनिक विभाग से जुड़ गए| उनके पढ़ाने की शैली बहुत ही उम्दा थी| साथ ही साथ वे 'बिट्सा' में भी बहुत सक्रिय थे और पूर्व छात्रों व अध्ययनरत छात्रों के बीच एक माध्यम की तरह सामंजस्य को बढ़ावा देते थे| बिट्स में एक छात्र और एक अध्यापक, दोनों ही वर्गों को जीने के कारण यहाँ भी उनका कार्य एक मध्यस्थ की तरह हो जाया आर्ट था| 5 वर्ष पहले बिट्स छोड़ चुके डीन नट्टू आज भी यहाँ के छात्रों के बीच चर्चा का विषय बन जाते हैं|

प्रो आई.जे. नागराथ :EEE विभाग में अपनी सेवायें चुके प्रो नागराथ बिट्स के डिप्टी डायरेक्टर रह चुके हैं। 1956 में यूनिवर्सिटी ऑफ़ विस्कोंसिंस से एम.एस. करने के बाद से 1999 तक ये बिट्स की कई पीढ़ियों कोपढ़ा चुके हैं और इनके नाम अनेक प्रकाशन रह चुके हैं। इनकी लिखी इलेक्ट्रिक मशीन्स की किताब अभी भी इलेक्ट्रॉनिक्स छात्रों को पढ़ाई जाती है।
इनके नाम पर के अलुम्नी बृजभूषण जी ने 2013 से एक फंड चालू किया है

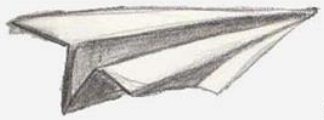

मेरे सपनों की कक्षा

-हर्षित श्रीवास्तव

पिंकू आज बड़ा परेशान था। एक तो साईकल पंक्चर होने के कारण कक्षा में देरी से पहुँचने पर डांट पड़ी, ऊपर से विषय भी था भौतिक विज्ञान, केवल सूत्र और गणना। रटंत विद्या आधारित वर्तमान शिक्षण प्रणाली की बारे में पिंकू को खीज तो थी ही, लेकिन आज तो इसके बारे में सोचते सोचते उसकी कक्षा में आँख लग गयी।

लंच का समय था, कक्षा खाली थी।

"गुड आफ्टर नून सर", पिंकू अभी आधी नींद में था कि ये शब्द उसकी कानों में पड़े। राघवेन्द्र ठाकुर, भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर कक्षा में थे और छात्रों के अभिवादन का गर्मजोशी से जवाब दिया।

"आज हम गुरुत्वाकर्षण और पलायन वेग के बारे में अध्ययन करेंगे।" "लेकिन इसके पहले सब लोग मैट्रिक्स से बाहर आ जायें। समवन ब्रिंग दिस नीरो बैक टू द रियल वर्ल्ड। वेक अप पिंकू।" सारी कक्षा पिंकू की स्थिति पर ठहाके लगा रही थी।

गुरुत्वाकर्षण की सामान्य अवधारणायें समझाकर राघवेन्द्र ने ग्लोब दिखाकर छात्रों से प्रश्न पूछा " आप ग्लोब के किस तरफ हैं?" "भारत के स्थिति के अनुसार छात्र बोले "ऊपर की ओर"।उन्होंने एक पेन नीचे गिराया और पूछा "जब ये पेन नीचे गिर रहा है तो नीचे वाले लोग क्यों नहीं?" पूरी कक्षा मौन। राघवेन्द्र ने थोड़ी सहायता की और पिंकू चहक के बोल उठा " क्यों कि धरती का गुरुत्वाकर्षण उसके केंद्र की दिशा में लगता है।"

"ब्रिलियंट! सही कहा, गुरुत्वाकर्षण हमेशा सेंटर ऑफ़ ग्रेविटी की तरफ लगता है।"

पिंकू बड़ा ही संतोष महसूस कर रहा था।

कक्षा आगें बढी, राघवेन्द्र पलायन-वेग के बारे में बता रहे थे कि जब कोई वस्तु और ग्रह उस चाल से गतिमान हो जिसके बाद वह गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र में वापस लौट कर न आये।

पलायन वेग के बारे में समझाते हुए कक्षा का समय समाप्त हो गया। ऐसे में कुछ छात्र राघवेन्द्र से पहले ही कक्षा से बाहर निकल पड़े। राघवेन्द्र ने व्यंग्य कसते हुए कहा कि कक्षा में तरह-तरह के छात्र रहते हैं और कुछ का मन हमेशा पलायन वेग पर होता है, जो मौका पाते ही कक्षा से पलायन कर जाते हैं और दोबारा लौट कर कक्षा में नहीं आते। इतना बोलना था कि बस फिर से ठहाके। और कक्षा खत्म।

"उठ जा पिंकू" लंच खत्म हो गया है और नयी कक्षा चालू हो गयी है। पिंकू उठा, वही कक्षा, वही पुराना माहौल, लेकिन स्वप्न में राघवेन्द्र की कक्षा अभी भी उसके चेहरे पर संतोष और मुस्कान छोड़े थी।

'सपनों की कक्षा' ने गुरु-शिष्य के मध्य शिक्षा के इस सम्बन्ध को और भी गहरा कर दिया। यह एक ऐसी कक्षा थी जिसमें पिंकू ने गुरु को केवल विद्यालयी शिक्षा नहीं अपितु अन्य क्षेत्रों में भी अपनें छात्रों के साथ रूचि दिखाते हुए देखा जिससे शिक्षा और भी रुचिकर लगने लगी।

आधुनिक युग में एक विद्यार्थी से यदि एक शिक्षक के बारे में पूछा जाए तो वह यही बताएगा कि उनके शिक्षक कक्षा में केवल अकादमिक ज्ञान और कोर्स को समय-सीमा के भीतर पूर्ण करने के विषय में ही उनसे वार्ता करते हैं पर पिंकू की कक्षा तो इन सबसे अलग थी।

छात्र शिक्षक समन्वय@BITS –एक नज़र

-असीम गुप्ता, पुरूजीत सिंह चौहान

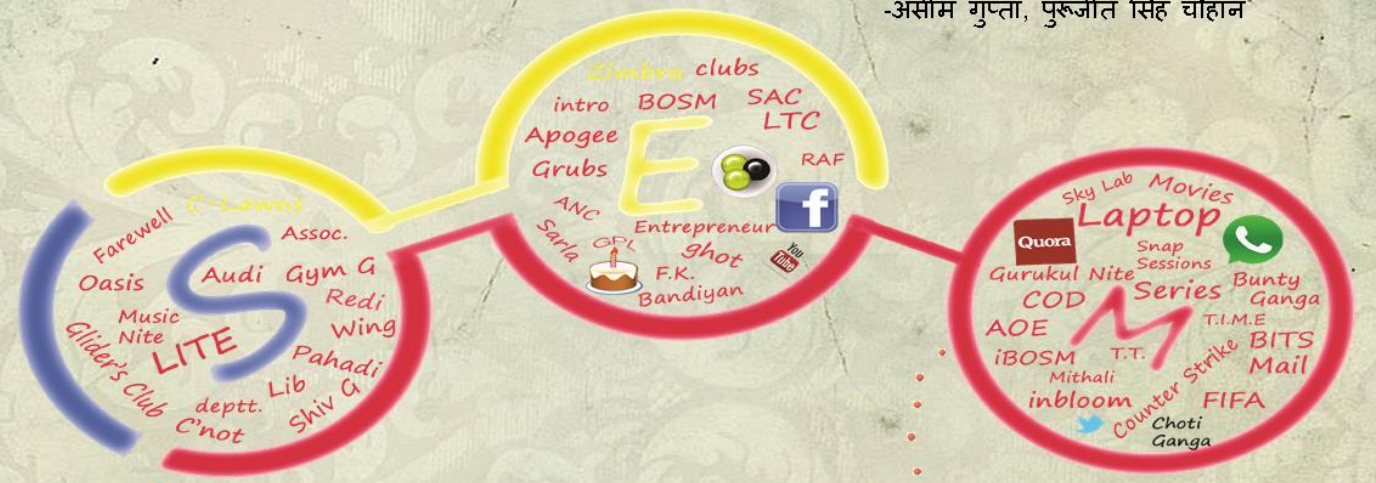

किसी भी शिक्षण संस्थान का सबसे महत्वपूर्ण अंग उसके विद्यार्थी होते हैं। इसके साथ ही शिक्षकों पर अपने विद्यार्थियों को न केवल पढाई में बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने में हर सम्भव मदद करने की एक बड़ी जिम्मेदारी होती है। ऐसे में दोनों पक्षों का एक दूसरे पर विश्वास रखना काफी महत्तवपूर्ण हो जाता है। जैसा कि हम अपने आस पास देख सकते हैं कि सिर्फ क्लास ही नहीं, क्लास के बाहर का आचार-विचार एक अत्यधिक महत्त्व का विषय है। आज की स्थिति का मुआयना करने का हमने एक प्रयास किया है, जिसमें एक सर्वे, कुछ प्रमुख फैकल्टी के विचार और आज की हमारी सोच और व्यवहार को मिलाकर हम बिट्स में छात्र और शिक्षक के बीच मौजूद तालमेल की एक तस्वीर प्रस्तुत कर रहे हैं।

नमस्ते हो गया महंगा

सर्वे के आँकड़ो से स्पष्ट है कि आजकल की तेज रफ्तार दिनचर्या और समय के साथ कदम मिलाने की होड़ वर्त्तमान के बिट्स कल्चर में साफ देखी जा सकती है। उदहारण के तौर पर अगर आप शिक्षक हैं तो कक्षा के बाहर किसी स्टूडेंट द्वारा अभिवादन आजकल सम्भावित ही माना जा सकता है, निश्चित नहीं। वहीँ दूसरी और स्टूडेंट्स भी इसे उपयुक्त नहीं मानते। गौर किया जाए तो यह स्थिति समयानुसार बदल गयी है। दोनों पक्षो की अपनी प्राथमिकताएं हैं, कई महत्वाकांक्षाएं हैं। ऐसे में कुछ हद तक अनभिज्ञता स्वीकार्य है। पर दूसरी ओर हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए की हमेशा का यह रवैय्या ठीक नहीं।चलते फिरते एक दो शब्द माहौल को सजीव बनाते हैं।

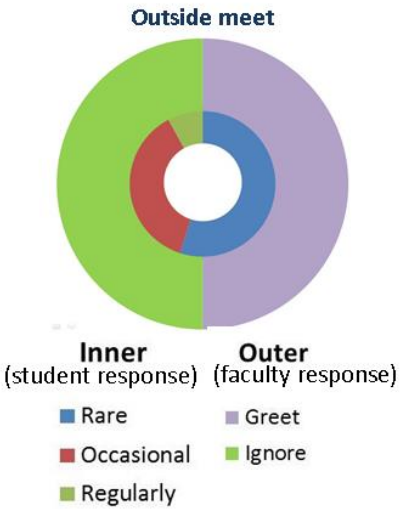

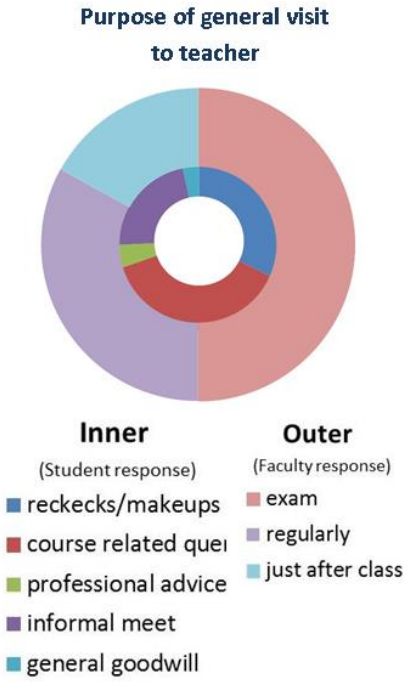

क्लास के बाहर

आप पढ़ रहे हैं, जाहिर है कि सब कुछ खुद नहीं समझ सकते। ऐसे में शिक्षक से विषय-संबंधी संदेह के लिए मुलाकात आम बात है। पर अगर शिक्षक से इस मुलाकात में आपका ध्यान सिर्फ रीचेक, मूल्यांकन , या 'ऐव ' पर हो तो निश्चित तौर पर आपको खुद का अवलोकन करने की ज़रूरत है। आप इसके अलावा अपनी दिलचस्पी के विषय के बारे में बात कर सकते हैं या फिर सामान्य बातचीत कर सकते हैं। शिक्षक न केवल आपको अकादमिक स्तर पर बल्कि प्रोफेशनल सलाह भी दे सकते हैं। जैसा कि देखा गया, टीचर्स के पास भी अधिकतर सुझाव क्लास के बाद या मिड सेम के दौरान ही आते हैं , इस स्थिति में अगर वे पाएं कि छात्र उनके पास अपनी बात कभी भी रख सकते है और रख रही है, तो यह न केवल शिक्षा के स्तर को और बढ़ाएगा बल्कि आपसी समझ को भी मजबूत करेगा।

को-करिक्यूलर कितना ज़रूरी?

यह वह समय है जिसमे स्टूडेंट्स और टीचर्स कुछ नया सीखने के लिए एक उत्कृष्ट संस्थान और पर्याप्त समय के साथ हैं, खुद को सिर्फ पढाई में बांधे रखना काफी नहीं। क्लब और डिपार्टमेंट्स बिट्स की छात्र-संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। इनमें काम करके न केवल पेशेवर होने का अनुमान लगाया जा सकता है बल्कि छात्र इस तरह से टीचर्स की प्रशासनिक समस्याओं को और बेहतर समझ सकते हैं। सर्वे के परिणामों से हर्षित करने वाली बात यह सामने आयी है अधिकतर शिक्षकों के लिए यह सब महत्व रखता है, और वे सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का समर्थन करते हैं, इसलिए स्टूडेंट्स भी चिंतामुक्त होकर अपने विकास पर और ध्यान दे सकते हैं, और इस तरह सबको गौरवान्वित कर सकते हैं।

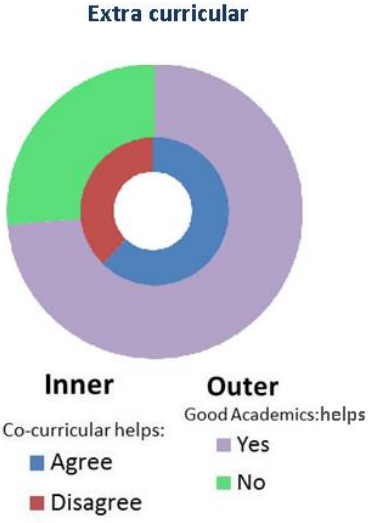

रिश्ता और सुझाव

बिट्स ने कई अद्भुत और उच्च स्तरीय व्यक्तित्व हमारे देश और दुनिया को दिए हैं। और भी उल्लास पूर्ण विषय यह है कि इनमें से अधिकांश लोग, प्रत्यक्ष और विभिन्न प्रकार के संचार माध्यमों से आज भी संस्थान और अपने शिक्षकों के संपर्क में रहते हैं। वहीँ बात करें अभी कैम्पस में मौजूद छात्र समुदाय की तो स्थिति यहाँ कुल मिलकर संतोषजनक हैं , हालांकि एक अच्छा खासा वर्ग एक सेमेस्टर या कोर्स के बाद टीचर्स को भूल ही जाता है। एक और बात जिससे सब वाकिफ है वह है मेंटर सिस्टम की दयनीय हालत। दोनों पक्षों के संयुक्त प्रयास से अगर कुछ और समय निकालने की कोशिश की जाये तो हम एक कदम और आगे बढ़ सकते हैं आपसी तालमेल को नयी ऊंचाईयों तक पहुँचाने में।

Meeting the instructor after course completion

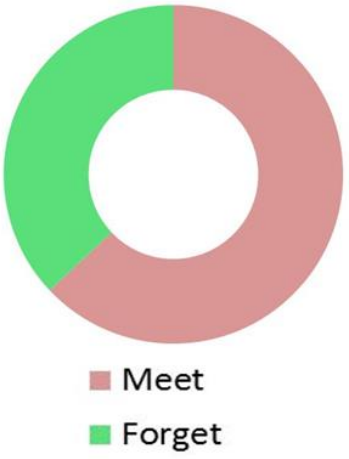

Current mode of interaction

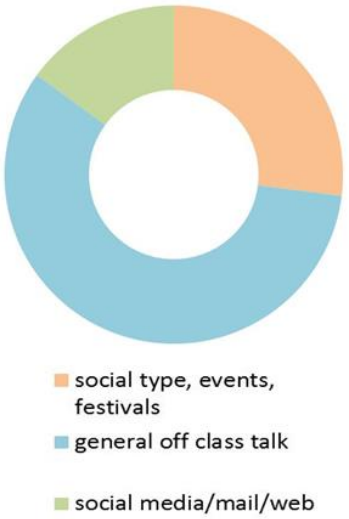

मिलना यहाँ भी होता है

छात्र शिक्षक के बीच तालमेल और मेलजोल संस्थान में कई रूपों में देखा जा सकता है। इनमें प्रमुख है कक्षा के बाहर सामान्य बातचीत, राष्ट्रीय पर्व और त्यौहार मनाना, सोशल मीडिया, आदि। समय के साथ तरीके बदल रहे हैं इसलिए इनके बारे में कोई भी संकीर्ण अनुमान लगाने से यह ज्यादा महत्वपूर्ण है कि नए तरीके भी पुराने वालों जितने ही कारगर हैं। अब आप पुराने समय की तरह हर बार मिलकर या घर जाकर शुभकामनाएं नहीं दे सकते पर मेसेज कर सकते हैं। परिस्थितियाँ भले ही बदल गयी हों, मुद्दे की बात यह है कि सामने वाले व्यक्ति को आपका सन्देश सही तरह मिले, भले ही वह कैसा भी माध्यम हो।

Meeting mentors

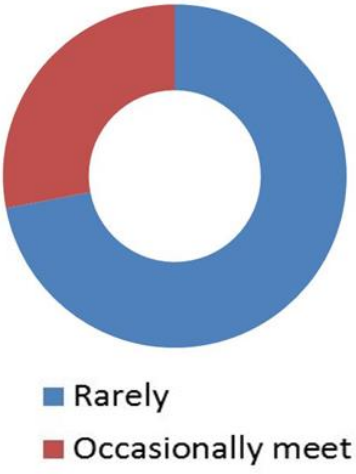

नकारात्मक सोच

यह एक सामान्य बात है कि दोनों पक्षों में पररपर सम्मान होते हुए भी कुछ मतभेदों की सम्भावना को नकारा नहीं जा सकता। जैसा कि पाया गया कि छात्रों एक वर्ग ऐसा भी है जिसके लिए शिक्षक अब समुचित प्रेरक नहीं हैं। कुछ लोग यहाँ निष्ठा की कमी, कुछ शिक्षा प्रणाली में खोट जैसे कारण देते हैं। पर सबसे खास बात है कि एक हिस्सा अपनी उदासीनता को ही एक प्रमुख कारण मानता है, जो निश्चित ही प्रशंसनीय है, क्योंकि यह दिखता एक तटस्थ विचारधारा रखते है, राय तुरंत नहीं बनाते। इसी तरह शिक्षक वर्ग की भी अपनी कुछ शिकायतें हैं , जैसे छात्रों में एक निश्चित स्तर से ज्यादा अपने अविष्य को लेकर तनाव, कार्यभार का दबाव, इंटरनेट, मोबाइल आदि का अत्यधिक प्रयोग, निरंतरता की कमी आदि। ये सब कारण मिलकर कुछ हद तक एक नकारात्मक असर डालते है दोनों के मेलजोल के बीच।

कुल मिलाकर हमें यह पाया कि दोनों पक्षों के बीच परस्पर सम्मान और सौहार्द एक प्रशंसनीय मुकाम पर है और संस्थान की अपेक्षाओं के अनुकूल है। पर कुछ मुख्य समस्याएं जो बेहद मामूली लगती हैं पर समन्वय पर एक गहरा असर डालती हैं, वे इस प्रकार हैं - पहली यह कि अगर दोनों पक्ष एक दूसरे से सहमत ना हो तो कई बार दोनों तरफ से कुछ अविवेकशील तत्वों के कारण कक्षा के अंदर और बाहर नकारात्मक माहौल बन जाता है। दूसरा यह कि अगर एक पक्ष दूसरे में बदलाव चाहता है तब भी वह पहला कदम उठाने से झिझकता है।

इनका समाधान रोचक रूप से बहुत ही सरल है। नियमित और विनम्र सलाह मशविरा तो कारगर है ही, इसके अलावा अगर हम एक दूसरे के बारे में अन्य बातें भी जानें जैसे कि सामाजिक, राजनीतिक, खेल, आदि से जुड़े विचार और परिकल्पनाएं, तो उपरोक्त समस्याएं काफी हद तक सुलझ सकती हैं। इसी प्रकार बिट्स में कुछ ऐसे माध्यम हैं जिनके बारे में कम ही लोग जानते हैं लेकिन ये शिक्षा एवं छात्र जीवन-पद्धति में सुधार के लिये प्रतिबद्ध हैं एवं छात्र तथा फैकल्टी की संयुक्त भागिता से ही सफल हो सकते हैं।

अकेडमिक काउंसिल सेल (ACC) जो कि हर प्रकार की समस्याओं का समाधान करने के लिए बिट्स पिलानी में सक्रिय फैकल्टी और छात्रों का कोष्ठ है|

24x7 फीडबैक सिस्टम की सुविधा जिसके अंतर्गत सामान्य फीडबैक के अलावा यदि छात्र चाहें तो विषय एवं सम्बंधित शिक्षक की लिए ID वेबसाइट पर किसी भी समय अपना फीडबैक दे हैं।

संस्थान को ज्ञानार्जन के लिया एक सर्वोत्तम स्थान बनाना यहाँ के हर सदस्य की जिम्मेदारी है। समन्वय ही हमारे समग्र विकास कि कुंजी है। अतः यह ज़रूरी है की हम आत्मविश्लेषण करें और खुदसे यह पूछें कि हम इस दिशा में क्या योगदान कर रहे हैं - सकारात्मक , नकारात्मक या फिर नगण्य। उसके बाद आप स्व्यं समझदार हैं उसके बाद समुचित बदलाव करने के लिए।

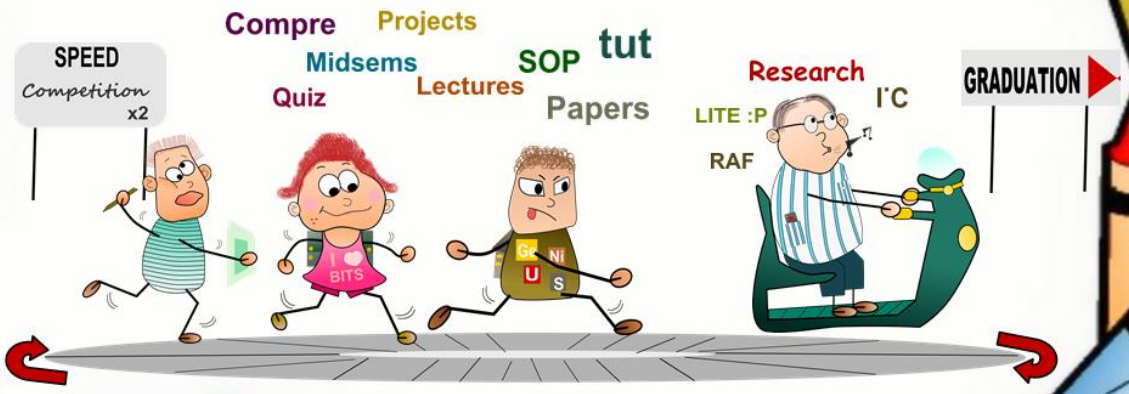

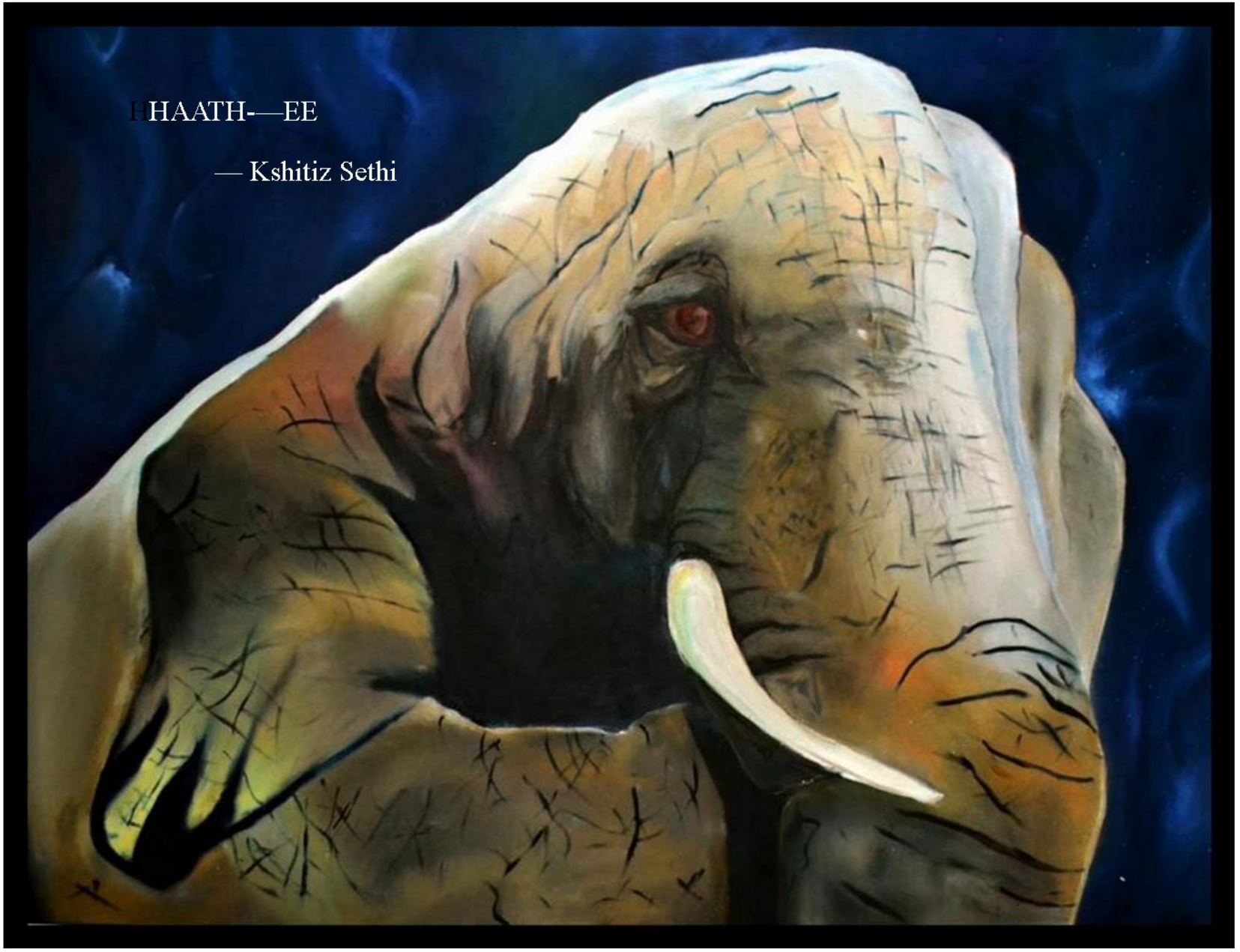
HHAATH-—EE
— Kshitiz Sethi

man ke kareeb parbhashi kavyadeep

भाषा माध्यम होती है मानव से मानव को जोड़ने का। भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के अनुसार भाषा अलग हो सकती है, किसी घटना का वर्णन अलग-अलग हो सकता है लेकिन उस घटना की भाँति ही प्रकृति के रहस्य स्थिति या समय के अनुसार कहीं भेद नहीं करते।

जर्मन, अंग्रेज़ी, हिंदी, चाइनीज़ या संस्कृत, सभी भाषाओं ने प्रार्थनाएँ की है, गीत गाए हैं, कलम से समाज का प्रतिबिम्ब बनाया है। भाषाओं की भिन्नता मानव में एकाकार उस शक्ति को भिन्न नहीं कर पायी जो सबका मूल है। भाषा की भिन्नता प्रकृति के इन पैमानों को जानने की बाधा नहीं होनी चाहिये,कुछ इसी सोच के साथ हिंदी पाठकों के लिए लिखी गयी कुछ अन्य भाषाओं की कवितायें, हिंदी में -

Johann Wolfgang von Goethe
द्वारा लिखी जर्मन कविता
'Gefunden'

'पाया' -यशादित्य व्यास

एक दिन वन में चलते-चलते
यूँही अनजाने में,
छाया में दिख पड़ा
एक नन्हा पुष्प खड़ा हुआ
चमक ऐसी मानो कि
आकाश में कुछ हों तारे
या फिर नन्हें नैन हों प्यारे
जैसे ही मैं उस फूल को
तोड़ने के लिये झुका
उस नन्हें फूल ने कहा:

मतलब क्या उस सुंदरता का
जो हाथ आते ही जाये मुरझा
खोद लिया मैंने पुष्प को
उसकी नाज़ुक जड़ों के साथ
बाग़ में अपने लाकर
लगा दिया अपने प्यारे घर के पास
और अब वही पुष्प पौधा बनकर
पनपाता है पुष्प से लदी डालियाँ
जो इस शांत कोने को भी बना देता है
महकती मुस्काती बगिया ।

संत त्यागराज द्वारा लिखी तेलुगु रचना "एंदारो महानुभावुलु, अंदारिकी वंदनामुलु " का एक अंश

वंदन भक्तों का प्रियंकचौहान

जगत में जितने महानुभव,
करें नमन मेरा स्वीकार।

देखा जिन्होनें कमल हृदय में,
शशि सा रघुवर का है रूप,
करता हूँ मैं उनका वंदन,
मिला जिन्हें आनंद असीम।

जिन प्रभु की कर वो स्तुति,
पा जातें हैं प्रेम अपार,
कितने ऐसे भक्त हैं उनके,
जो त्यागराज के स्वामी हैं।

विलियम वर्ड्सवर्थ की अंग्रेज़ी में लिखी 'The Agony of life'

द्वंद्व जीवन का -दिव्यांशु चौधरी

जब आकाश में चंदा
घूमें अपनी मस्ती में
छुपे वो मन की आँखों से
और घुस जाए बादलों के आँचल में
जब छितराये ये बादल
तब दूधिया रोशनी हो जाए जग में।
हम ठहरे अंधी दौड़ के प्राणी
कर्म में हैं होड़, होड़ सी ही वाणी
धीमी चाल पर ख़ुश होते
पूँजी कमाने का रास्ता ढूँढ़ते
मुरझा हुआ चेहरा लेकर
पूरा साल घिसटते चले
जो कभी ये नीच दुनियादारी
पहुँचाये मेरी आत्मा को ग्लानि
चाहे सब्जबाग दिखे उन बातों में मुझे फिर
या स्वर्ग का दर्शन कराती नावें
पर मैं लूँ एक विपरीत फैसला
और माफ करे मुझे ऊपरवाला वो।

कलम

--- विनायक केसरवानी

अपने अलग हुए सिरे के बराबर
पड़ी हुई थी कलम|
रिसती स्याही के बीच,
बेसुध, निढाल गिरी थी कलम|

एक सपाट, कोरे कागज़ पर,
धीरे-धीरे चलना शुरू किया था उसने |
हर अक्षर के साथ ,
एक कहानी लिख रही थी वो|
कभी उतरती कभी चढ़ती,
पर कहानी वो लिखती रहती|
उस कोरे कागज़ पर,
एक पहचान छोडती होती|

कलम आगे बढती गयी,
पर उसकी डगर अब मुश्किल होने लगी|
वो कागज़ जो था कभी सपाट,
अब खुर्दुराने लगा|
लिखावट की स्याही भी काली हो गयी,
मानो किसी आते तूफ़ान का अंदेशा हुआ|
लिखावट कुरूप हो गयी,
मानो कहानी समाप्त करने की हड़बड़ी हो लगी|

खून के जैसी लाल अब स्याही हो गयी,
बेतहाशा भाग रही थी कलम,
कहानी को अंजाम देने की जल्दी जो थी
तभी उस खुरुदुरे कागज़ की डगर पर
आया एक उभार, एक अड़चन|
सिरे से अपने अलग हो गयी वो|

अपने अलग हुए सिरे के बराबर
पड़ी हुई थी कलम|
रिसती बूंदों के बीच,
बेसुध, निढाल गिर पड़ी थी कलम||

घुटन

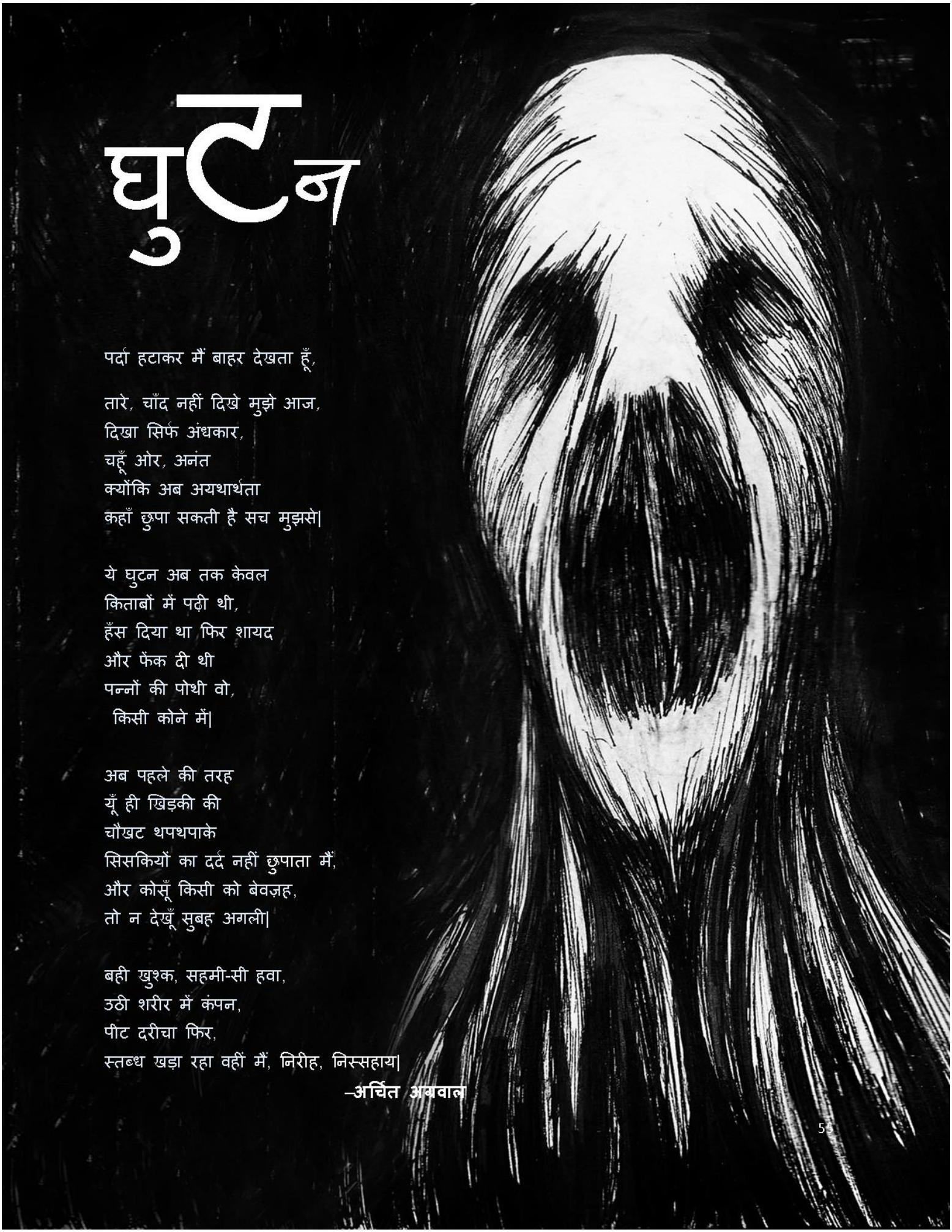

पर्दा हटाकर मैं बाहर देखता हूँ,

तारे, चाँद नहीं दिखे मुझे आज,
दिखा सिर्फ अंधकार,
चहूँ ओर, अनंत
क्योंकि अब अयथार्थता
कहाँ छुपा सकती है सच मुझसे|

ये घुटन अब तक केवल
किताबों में पढ़ी थी,
हँस दिया था फिर शायद
और फेंक दी थी
पन्नों की पोथी वो,
किसी कोने में|

अब पहले की तरह
यूँ ही खिड़की की
चौखट थपथपाके
सिसकियों का दर्द नहीं छुपाता मैं,
और कोसूँ किसी को बेवज़ह,
तो न देखूँ सुबह अगली|

बही खुश्क, सहमी-सी हवा,
उठी शरीर में कंपन,
पीट दरीचा फिर,
स्तब्ध खड़ा रहा वहीं मैं, निरीह, निस्सहाय|

–अर्चित अग्रवाल

आशा - एक सफर

-राजेश कुमार विजयवर्गीय

भार दिल पे था, थोड़ा उतरा नीचे और पाँवों की जंज़ीर बन गया,
लगा सब कुछ रुका-रुका सा, घाव लगता अब एक अमिट पीर बन गया।
सुना था लेकिन मैंने- "चलते रहने का नाम जिंदगी है"
रुका सा लगता था सब, चलती बस कलम, सोचा कलम को ही ज़िंदगी बना लूँ ।
चलती बस कलम थी , लेकिन बनाती चित्र डरावने, दिखाती काली स्याही,
चलती कलम भी डराती अब, मिलवाती मुझ से प्रतिबिम्ब मेरा ही।

सुना था लेकिन मैंने "अपने से आँखें ना चुराओ"
सोचा, जो भरा है गन्दा अंदर,कलम बाहर ही तो निकाल रही है।
आँखे उठी, बाहर देखा, कलम में दिखी हरी स्याही अब,
कलम हो गयी व्यस्त बनाने में, भरे से चित्र, हरे थे सब।
चलती कलम बना रही थी चित्र, परखना भी शुरू कर दिया इसने,
स्याही खत्म होने से पहले, क्यों न मोनालिसा ही बना दूँ।

सोचा फिर मैंने - स्याही का क्या भरोसा, काली अगर हो जाये कल को तो ??
थोड़ी रुकी कलम, थोडी झुकी भी, बनाने लगी कुछ अनजान सा,
कभी बाहर का पेड़ बनाये, कभी कुछ बिन पहचान सा।

सुना था मैंने - "फरा तो झरा"
सोचा फिर मैंने - क्यों न खोलूँ में अपनी किताब, काली स्याही के पन्ने भी थे मेरा ही भाग
आज इनका अस्तित्व मैं स्वीकार करता हूँ, पर इन्हें अपना बनाने से इंकार करता हूँ।
चली कलम फिर ऐसी कि, खुदा के वरद हस्त ने जैसे छुआ,
द्वंद्व जहाँ से शुरू हुआ था, वहीं अंत में खत्म हुआ।

बादल की तरह बिखर जाने को दिल करता है

—रुपेश नलवाया

बादल जैसे बिखर जाने को दिल चाहता है
जीवन की कठिनाइयों से
लोगों के बीच तनहइयों से
चिंता की गहराइयों से
कुछ समय दूर जाने को दिल चाहता है।
दूर नील गगन में
बादल जैसे बिखर जाने को दिल चाहता है।
लहरों में गोते खाने को
फिज़ाओ के साथ बह जाने को
वादियों में खो जाने को दिल चाहता है।
दूर नील गगन में
बादल जैसे बिखर जाने को दिल चाहता है।
थोड़ा बेपरवाह होने को
सुनहरे सपनों की नींद सोने को
किसी के लिए सब कुछ खो देने को दिल
चाहता है।
दूर नील गगन में
बादल जैसे बिखर जाने को दिल चाहता है।
दिल चाहता है, ये पल कुछ देर थम जाए
पुराने यादगार पल फिर लौट के आए
एक बार फिर कोई मेरे बालों को सहलाए, ये दिल चाहता है।
दूर नील गगन में
बादल जैसे बिखर जाने को दिल चाहता है।
खयालो में खो जाने को
किसी और ही दुनिया में गुम हो जाने को
जैसा हम चाहे वैसा हो जाने को दिल चाहता है
दूर नील गगन में
बादल जैसे बिखर जाने को दिल चाहता है।

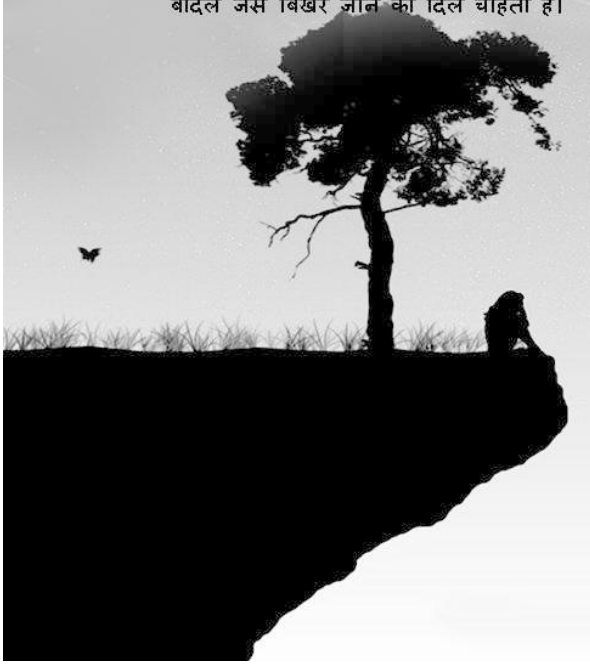

जीवन की खोज

–राम प्रकाश यादव

प्रत्येक क्षण में जीवन की खोज करता हूँ,

अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में

सब कुछ समझने और ये समझने के लिए

कि मैंने अब तक कुछ ही समझा है,

बाकी चीजों को समझने के लिए, फिर भी

प्रत्येक क्षण की कुंठा और जिज्ञासाएँ,

अनवरत।

तो क्या हुआ?

— अनिरुद्ध मिश्र

तो क्या हुआ, रोटी नहीं उनके यहाँ, हो न सही
तो क्या हुआ, जो छत नहीं, उन्हें नींद तो आती रही
तो क्या हुआ, नंगे बदन वो रात में ठिठुरा करें
तो क्या हुआ, जब रोड पर चलकर उन्हें छाले पड़ें
तो क्या हुआ, जूठन बटोरें वो जो कूड़ेदान में
मैंने नहीं ठेका लिया, जाएँ कहीं भी भाड़ में|

तो क्या हुआ, वो 'राम' के ही नाम पर लड़ते रहे, लड़वा रहे
तो क्या हुआ, 'आदर्श-कोयला-खेल-2G', सब दबाकर खा गए
तो क्या हुआ, 'बहुजन' मरा, माला चढ़ी और मूर्तियाँ बढ़ती गईं
तो क्या हुआ, 'साईकिल' चली,भूले 'समाज', 'बेटे-बहू' पलती गईं
तो क्या हुआ वो रोज गुर्राते, मगर आते हैं वापस माँगने
मुझे फर्क ही पड़ता है क्या, जाएँ कहीं भी भाड़ में|

तो क्या हुआ, जो वह बेचारी जन्म भी न ले सकी
तो क्या हुआ, जो आ गई, वह राह चलते लुट गई
तो क्या हुआ, जो लिख नहीं पाते, उन्हें तो आस 'मिड-डे-मील' है
तो क्या हुआ, यह तंत्र ऐसे भ्रष्ट मानों नोचता कोई चील है
तो क्या हुआ, आज 'फैशन' है जरूरी स्वचारित्र-निर्माण में
सब ठीक ही तो चल रहा, कमियाँ कहाँ इंसान में?

पर कहना न फिर, रहे पागलों से, तुम जिंदगी भर दौड़ते
कहना न फिर, रहे जानकर तुम सच से ही मुँह मोड़ते
कहना न फिर, वो था यूँ कि अपनी ही आँखें फोड़ना
कहना न फिर, देर हो गई, संभव नहीं कुछ जोड़ना
कहना न फिर, तुम खोखले होते गए, तक आत्मा में
कैसे-कहाँ-कब तक छिपोगे, जाओगे तुम किस भाड़ में?

क्षितिज

--- विनायक केसरवानी

पलकें झपकाईं,
नज़रें मिलाईं
आँखों में उभरती नमी को
दबाया,
झूठी हंसी के पर्दे के पीछे
छुपाया।

कदम बढ़ाया,
खुद को एक झूठे शिखर
पर बिठाया।
बांध के रखा था जिन
आँसुओं को,
बूँद-बूँद कर टपक पड़े
वो।

कदम उठाया,
नज़रें घुमाईं तो क्षितिज
को सामने पाया।
लाल सूरज को देखा,
छूने को तैयार था वो
क्षितिज की रेखा

कदम जमाया,
झाँका तो नीचे प्यासी चट्टानों
को पाया।
उनकी प्यास बुझाती लहरों को
देख,
एक....
एक दबा ख़याल आया।

अब तेजी से बढ़ती मेरी ओर वो
चट्टानें,
और उनके पीछे आई मुझे
उगलने को आतुर वो लहरें।
पड़े, उन चट्टानों के बीच,
छूटती हुई साँसों के बीच,
एक आखिरी सवाल ज़हन में
आया,
क्या मैं आने वाले कल के सूरज
की तरह
इक नया आगाज़ करूंगा?
या मैं आज के सूरज की तरह
ढलने को जाऊंगा?

फिर कुरुक्षेत्र

-अरुण कुमार पूनिया

क्या रखा कल में
आजादी की पुकार, पल-
पल में
क्रान्ति आज से
भिड़ेंगे भ्रष्ट राज से।

कहाँ गई आजादी?
कहाँ वो, जो सोची,
अमन, चैन, सुकून की बौछार है?
ये कैसा अत्याचार है?
हम चुनें, हमें लूटें
कुछ कहें तो ना सुनें
अजब इनका व्यापार है।
मृग तृष्णा छोड़ो,
संभलो,
'रावण' लक्ष्मण रेखा पार है।।

मन में सुलगती आग है,
ये क्रांति की लपट,
उठी तो बार-बार है
तो फिर आज मगर,
सजी इस लंका को,
खाक करने में क्यों इंकार है?
हाथों में हाथ,
सिंह-सी हुँकार, हो तैयार
भ्रष्टाचार की प्रलय में अब क्या विचार है?
कह तन, मन, धन, सब वार है।

कैसा ये स्वतंत्रता पर्व है?
ना सीने में गर्व है
कैसा ये आजादी का त्यौहार
है?
हर जन शर्मसार है|
या ये अहसास है,
ये वंश, ये वंश,
सरदार, तिलक, सुभाष है.
फिर क्यों आज,
आज खुद पे, अविश्वास है?
क्यों इरादे तार-तार घास हैं ?
उठ, कर प्रहार
हो समुद्र मंथन को तैयार
स्वतंत्रता का ये अमृत अपार है।।

लोहे पे लोहे का, जो ये वार है
सो चोट की गहराई अपार है।
फिर भी सत्य धर्म की रक्षा,
सदियों से हमने अपनाई बार-बार है।
भीष्म सैया सजती है, सजने दो
इस धर्म युद्ध के लिये
कुरूक्षेत्र इक बार फिर तैयार है।
भ्रष्ट का संहार ही,
सत्य का श्रृंगार है।।

उठ, चल, बढ़
शंका को कुचल
द्रौपदी का चीर है
और कृष्ण को विचार है ?

अंतर्द्वंद्व

-रोहित गोयल

क्यों मैं सहमा-सहमा सा रहता हूँ?

क्यों ये रहता सतत भय का आभास?

क्यों मन घबराया-सा रहता हमेशा है?

क्यों मैं रोज सुबकता रहता हूँ?

अब साथ किसी का भी मजबूरी सा लगता है,

लेकिन दूर होने का दर्द भी महसूस करता हूँ|

प्यार बेमाना सा लगता है,

नफरत से भी अब और नाता रख नहीं सकता|

बोलना चाहता हूँ पर बात करने से डरता हूँ,

सुनना चाहता हूँ पर सुने जाने से डरता हूँ,

छाँव में गर्मी, धूप में लगती अब ठंड है,

एकांत में लगता शोर क्यों ये प्रचंड है,

दूर जाना है पर धुंधला है ये सफर,

तलाश है एक रोशनी की जो धुंध को चीर दे,

डर हमेशा लगता है पर अभयदान का आँचल चाहिए,

पहचानना चाहता हूँ खुद को ज़िंदगी के आईने में,

क्या चीज़ हूँ मैं इस दुनिया में, सन्देश ये कोई पँहुचा दे मुझे|

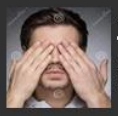

विश्वास

हार्दिक मित्तल, निधि अग्रवाल, गोविन्द शर्मा

छींक आना

प्राचीन काल में हिन्दू मानते थे कि उनकी सांस उनकी आत्मा है। छींक आना यानि अपनी सांस को बाहर निकालना, जिसे हिन्दू अपनी आत्मा को अपने शरीर से निकालने के बराबर मानते थे। और यह भी कहा जाता है कि एक बार छींक के कारण महामारी भी फैल गयी थी। इस कारण से छींक आने पर हम "गॉड ब्लेस यू " कहते हैं।

नींबू - मिर्ची

हमने बहुत स्थानों पर देखा है कि एक नींबू के साथ 7 मिर्चियाँ एक धागे में बँधी हुई है और वह पूरा गुच्छा प्रवेश द्वार पर लगाया हुआ है| लोग यह 1 नींबू और सात मिर्चों का टोटका अपने घर, दफ्तर, दुकानों एवं अन्य स्थानों के लिए प्रयोग करते हैं| माना जाता है कि ये सब निर्धनता देवी "अलक्ष्मी" के लिए किया जाता है| अलक्ष्मी घर में निर्धनता लाती है और अशुभ भी करती है| इन सब से बचने के लिए अलक्ष्मी को दूर रखा जाता है| कहा जाता है कि अलक्ष्मी को खट्टा और तीखा खाना अच्छा लगता है| इसलिए घरों के प्रवेश द्वार पर नींबू खट्टे के लिए और मिर्ची तीखेपन के लिए लगाई जाती है ताकि अलक्ष्मी घर के बाहर से ही तृप्त हो जाए और वह भीतर दस्तक ना दे| इससे सब कुशल -मंगल रहेगा और घर में कभी निर्धनता नहीं आएगी| और इसमें 7 मिर्ची हफ्ते के प्रत्येक दिन के हिसाब से लगाई जाती है| और इस गुच्छे को हर हफ्ते शुक्रवार को बदला जाता है|

टूटा हुआ शीशा

टूटे हुए शीशे से जुड़े मिथक का प्रारम्भ प्राचीन रोम में हुआ। उनका मानना था कि शीशे में देखने पर रूप ही नहीं अपितु हमारी आत्मा भी उससे जुड़ जाती है । और उसके टूटने पर हमारी आत्मा के सात अंश टूट जाते हैं तथा उस व्यक्ति को सात वर्ष तक संघर्ष करना पड़ता है। बचने के उपायों में एक यह था कि शीशा टूटने के सात घंटे बीतने के बाद शीशे को चन्द्रमा की रोशनी में दफना दिया जाता था। 15वी शताब्दी में वैनिस ,इटली में शीशे सोने,चांदी के बनते थे उनके टूटने पर उनका खर्च वहन करना मुश्किल होता था इसलिए वहाँ इस मिथक ने जन्म लिया, बाद में 1600 में इंग्लैंड ने सस्ते तरीके से शीशा बनाना सीख लिया परन्तु यह मिथक आज भी बना हुआ है।

दरवाजे की तरफ पैर करके नहीं सोना चाहिए

उत्तर पूर्वी भारत में ऐसी मान्यता है कि दरवाजे की तरफ पैर करके सोने से आपकी कोई आत्मा चोरी कर लेगा क्यूंकि मुर्दा लोगों को भी इसी अवस्था में कमरे से बाहर निकाला जाता है।

पक्षियों की बीट

बिट्स में भले ही आप कौओं को कोसते होंगे लेकिन यह मान्यता भी रह चुकी है कि अगर किसी पर पक्षी बींट कर देते हैं तो उस पर स्वर्ग से समृद्धि की वर्षा होने वाली है।इसके पीछे विचार यह है कि जब आपको कोई कष्ट होता है तो इसके बाद अवश्य ही आपको कुछ अच्छा मिलने वाला होता है। रास्ते पर चलते चलते अगर केवल आप पर बींट गिरती है तो अंदाज़ यह लगाया जाता है इतने लोगो में केवल आप पर स्वर्ग से समृद्धि के वर्षा होने वाली है।

स्थिरता जीवन की

–विक्रांत शर्मा

लक्ष्यहीन जीवन है समान
जैसे अंधकार भरी रात में
बिना दीपक लिए चलना,
स्थिरता है जीवन की
परिवर्तन में|
चलना और चलते रहना,
ना कि शरद की किसी रात में
वृक्षों के पत्तों जैसे
स्थिर अचल हो जाने में,
और फिर एक दिन
पतझड़ आने पर
गिर जाने में,
नहीं-नहीं वह नहीं है
जीवन की स्थिरता,
स्थिरता है जीवन की
परिवर्तन में|
सदा सर्वदा बिना रुके
चलने में,
भले ना हो साथ किसी का
फिर भी अविचलित हो
काँटों भरे पथ पर
चलने में,
अंधकारों में दीपक ले
चलने में है स्थिरता,
संघर्ष में है स्थिरता,
पुरानी रूढ़िवादी
सोच के खंडहरों को
ध्वस्त करने में,
नवाचार के बीज
बोने में है स्थिरता,
आचार-विचार और
व्यवहारों से
दुनिया को चकित करने
में है स्थिरता,
तेज़ हवाओं में अकड़कर
रहने कि बजाए
झुक जाने में है स्थिरता,
वरना आँधियों में अकड़कर
खड़े वृक्षों का
क्या होता है हाल?
जानते नहीं क्या सभी,
आकांक्षाओं में नहीं
तब तक स्थिरता
जब तक नहीं है
नींव मजबूत
विचारों की,
गुंबद तो हर कोई बनना
चाहता है
पर स्थिरता है
नींव का पत्थर बनने में
ना हो दीपक तो भी
मन के उजालों से
पथ आलोकित करने में,
स्थिरता है जीवन की
परिवर्तन में |

संकलन "रचना" का

-यशादित्य व्यास

क्या आपने कभी सोचा है कि कुछ चीज़ें ऐसी भी हो सकती है जिन्हें सतत् आगे बढ़ने रहने का वरदान मिला हो, बिना रुके, बिना झुके। मानव जानता है उसकी कमजोरियाँ उसे रोक सकती है, इसलिए पटुता दिखाकर वह कुछ ऐसी चीज़ें स्थापित कर देता है जो निरंतर आगे बढती रहती है|

रचना से सफर शुरू करके आज वाणी अपने 50 बसंत पार कर चुकी है और ऐसा कोई वर्ष नहीं गया होगा जब वाणी का नयाजन्म न हुआ हो।

निरन्तर आगे बढ़ने के इस क्रम में स्मृति पटल पर एक कहानी जुड़ती चली जाती है, जिसे हम अतीत कहते हैं।

मज़े की बात यह है कि बिट्स के अतीत का यशोगान यह पत्रिका कर रही है, उतना ही पुराना अतीत इस पत्रिका का भी है|

अतीत वाणी का, कुछ ताजगी भरी पंक्तियों के साथ -

गिनती ज़िन्दगी की

वाणी-2009

प्रतीक माहेश्वरी

बच्चे थे तो टॉफिया गिना करते थे,
थोड़े बड़े हुए तो दोस्त गिना करते थे,
स्कूल पहुँचें तो हाथों पर छड़ियाँ गिना करते थे,
कॉलेज आये तो मार्क्स गिना करते थे,
थोड़े और बड़े हुए तो गर्ल-फ्रेंड्स गिना करते थे,
नौकरी लगी तो तरक्कियां गिना करते थे,
शादी हुई तो बच्चे गिना करते थे,
फैक्ट्री लगायी तो रुपये गिना करते थे,
दादा बने तो पोते गिना करते थे,
आज जा रहे हैं इस दुनिया से,
और साँसे गिनने कि घडी आ गयी है....
सोच रहा है क्या सिर्फ गिनते-गिनते ज़िन्दगी निकाल दी?
काश कभी इन उँगलियों पर उसका नाम भी गिना होता,
जिसने यह गिनती बनायीं हैं,
अब क्या फायदा?
क्या फायदा अब सोचने से?
साँसो का दामन तो छूट रहा हैं,
और साथ-साथ दो आँसुओ कि क़ीमत भी गिन रहा है....

कुणाल गुप्ता

यह दीपक मेरा नहीं है

वाणी-2006

यह दीपक मेरा नहीं है
यह दिशा मैंने नहीं चुनी
यह पथ मेरा नहीं है
ध्वज कुछ किलों पर
जड़ तो आया हूँ।
पर श्रेय मेरा नहीं है।

मेरे दाँय और बाँय
भीड़ अजब थी
अनकहा द्वंद्व सा छिड़ा था
पाँव थिरके , आभास भी न हुआ
मैं कब कहाँ चल पड़ा था।

समय बीता , उत्तेजना में अल्पविराम आया
धुँआ घट सा रहा था
सब रुक चुके थे , पर जाने क्यों
आँख मूंदे , मैं अब भी चल रहा था।
दूर एक मध्दम सी लौ मैं खींचती रही
एक गूटव सा था , मैं बढ़ता चला गया
नन्हा सा एक दीपक मिला
कम्पन थी , पर मैंने उसे हाथ में लिया।

हथेली में इसे सजाए , एक टीले पर खड़ा हूँ
अब कहीं अँधेरा नहीं है
लौ के पास मैं खड़ा हूँ
पर यह दीपक मेरा नहीं है

निरुपम आनंद

अग्निशिखा

वाणी -2007

एक लपट उठी थी धरती के गर्भ से
आकाश को छू कर बरस पड़ी बूंदों से सोंख ली वही बूंदें धरा ने
आया बसंत तो
जन्म दिया पलाश के जलते फूलों को
एक बूंद अभागी
बरसी आकाश से तो
मगर ना मिली धरा से
लिए अपना ज्वलंत अस्तित्व
भटकी हवा में
कभी जलती दिये में
कभी बहती लहर में
जुगनू सी जलती बुझती बूंद
एक रात के चौथे प्रहर में
स्वाति नक्षत्र में
एक प्यासे चातक ने
मुख खोला ही था
बूंद के लाख मना करने पर भी
पी गया वह तृषित सा
जलती बूंद उतरती कंठ से?
जीवन भर
सुलगती रही बूंद अग्निशिखा सी
चातक के हृदय से !

bits के बाहर

bits के साथ - wilp

– अंकिता दैया, नितिशा सौम्या

एफ.डी. 2 और एफ.डी. 3 के बीच दौड़ते वक़्त शायद कभी न कभी आपका ध्यान रूम नंबर 2152 के तरफ जरूर ही गया होगा। बिट्स में इतने सारे डिपार्टमेंट्स में से एक डबल्यू.आई.एल.पी. भी है यानि वर्क इंटीग्रेटेड लर्निंग प्रोग्राम। कहने के लिए तो ये 1 छोटे कार्यालय जैसा लगता है पर इसकी पहुँच देश भर में हैं। इसके तहत लाखों छात्र विभिन्न प्रोग्राम्स के द्वारा बिट्स से जुड़े हुए हैं। कार्यरत प्रोफेशनल्स के लिए ये एक सुअवसर प्रदान करता है अपने काम करते हुए अपनी शैक्षणिक योग्यता को बढ़ाने का।

यह प्रोग्राम पिछले 30 सालों से चलाया जा रहा है और कई बड़ी कम्पनियाँ इससे जुड़ी हुई हैं पर इन सबके बारे में हम बहुत ज़यादा नहीं जानते। यह प्रोग्राम इस प्रकार बनाया गया है कि शिक्षण का स्तर बिट्स में पढ़ रहे ऑन-कैंपस प्रोग्राम्स के जैसा हो।

इसके अंतर्गत वर्चुअल क्लासरूम्स, अनुभवी प्रोफेसरस् द्वारा ऑनलाइन लेकचर्स, तक्षशिला से स्टडी मटीरियल्स और इवैल्यूएशन तथा नियमित रूप से परीक्षायें होती हैं।

WASE (विप्रो अकेडमी ऑफ सॉफ्टवेयर एक्सीलेंस)

अगर यहाँ के ऑफ कैंपस प्रोग्राम्स कि बात हो और WASE का नाम नहीं आये, ऐसा कैसे हो सकता है। ऐसा देखा गया है कि बहुत सी कंपनियाँ इस तरह के कोर्सेज़ को लेकर गम्भीर नहीं होती वहीं विप्रो इसे बहुत अहमियत देता है। इसकी शुरुआत 1995 में हुई थी। यह सबसे पुरानी तथा सबसे सफल वर्क इंटीग्रेटेड लर्निंग प्रोग्राम है। इससे करीबन 9000- छात्र जुड़े हुए हैं। *कॉर्पोरेट यूनिवर्सिटी एक्सचेन्ज अवार्ड, जो कि उन टाई अपस् को दिया जाता है जो अपने कर्मचारियों की उन्नति को प्रयासरत हो, WASE को 2007 में दिया गया था।*

हिंडाल्को

हिंडाल्को और बिट्स पिलानी के बहुत ही विशेष ताल्लुकात हैं। हिंडाल्को पहली कंपनी थी जिसने 1972 में बिट्स के प्रैक्टिस स्कूल प्रोग्राम को आयोजित किया था। 28 अक्टूबर 2006 में इस रिश्ते को आगे बढ़ाते हुए दोनों ने ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया जिसका उद्येश्य शैक्षिक अन्वेषण को प्रोत्साहित करना है। 2007 में हिंडाल्को ने अपने 74 कर्मचारियों को बिट्स से वर्क इंटीग्रेटेड लर्निंग प्रोग्राम के बी.एस पॉवर इंजीनियरिंग में दाखिला करवाया। 2009 में बी.एस. प्रोसेस इंजीनियरिंग की शुरुआत हुई।

YAHOO

YAHOO के मानव संसाधन विकास संबंधित ज़रूरतों की पूर्ति हेतु बिट्स ने बैंगलोर में ऑफ कैंपस सेंटर खोला है। ell जैसी बड़ी कम्पनी से हाथ मिलाकर इस प्रोग्राम को नयी ऊँचाईयाँ मिली। dell बैंगलोर ने इसकी शुरुआत 2005 में 2 साल के एम.एस. सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग से की। ये तो थी कम्पनियों की बात , बिट्स का इंस्टीट्यूटस् से भी collaboration है। मरीन इंजीनियरिंग तथा नॉटिकल फार्मेसी जैसे बी.ई कोर्सेज तोलानी मेरीटाइम इंस्टीट्यूट में चलाए जा रहे हैं।इनके अलावा 2008 में टाटा केमिकल्स लिमिटेड, बबराला के साथ अकादमिक और शोध स्तर बढ़ाने को पारस्परिक सहयोग का MoU भी इस प्रोग्राम के अंतर्गत हुआ| और अन्त में हम यहीं बताना चाहेंगे कि बिट्स नये collaborations का हमेशा स्वागत करता है।

छात्रों का काम
बिट्स के नाम

निर्माण: –सुयश आहूजा, अंचल गुप्ता

निर्माण की स्थापना अपने कॉलेज के ही कुछ छात्रों ने सन् 2005 में की थी| आरंभ में इसका नाम '**मेरा भारत**' हुआ करता था| निर्माण की स्थापना का उद्देश्य संसाधन-विहीन लोगों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करना था| इसकी स्थापना में बिट्स के तत्कालीन डायरेक्टर प्रोफेसर एल.के.महेश्वरी की भी अहम भूमिका रही| निर्माण के प्रतीक चिन्ह का भी बहुत महत्व है| प्रतीक चिन्ह में 4 लोग (4 अलग-अलग रंगों द्वारा) एक विविध राष्ट्रव्यापी समुदाय को दर्शाते हैं जो समाज में बदलाव लाने के लिए प्रयासरत है और 'I' अक्षर के ऊपर लौ एक निर्माण सदस्य की सभी भारतवासियों के लिए भारत को एक सुंदर घर बनाने की प्रबल इच्छा और उसके गहन दृढ़ संकल्प को दर्शाती है| गौर करने वाली बात तो यह है कि महज़ 9 वर्षों की छोटी सी आयु में यह संस्था चार राज्यों में अपने कदम जमा चुकी है| निर्माण की 5 शाखाएँ - पिलानी, गोवा, हैदराबाद, बैंगलोर और बिट्स हैदराबाद में कार्यरत है| इसके पिलानी,गोवा एवं हैदराबाद अध्याय विद्यार्थियों द्वारा संचालित हैं जबकि अन्य 2 शाखाओं की देख-रेख हमारे पूर्व छात्र करते हैं| निर्माण देश के **सामुदायिक विकास** के क्षेत्र में, **शिक्षा** के क्षेत्र में और **आजीविका** के क्षेत्र में प्रमुख रूप से कार्यरत है| तो यदि आप भी इस देश में बदलाव के बारे में सिर्फ विचार करने से आगे बढ़ते हुए इस दिशा में काम करना चाहते हैं तो निर्माण आपके लिए सही मंच है|

अक्युत:

अक्युत' कोई लाल-नीले रंग का खिलौना नहीं और न ही ऑप्टिमस प्राइम जैसी कोई डींग है, फिर भी अक्युत और ट्रान्सफॉर्मर हीरोज़ में बहुत सारी समानताएँ हैं| 'अक्युत' का अर्थ है '**जो कभी न गिरे**' या '**अविनाशी**'| बिट्स में 'अक्युत' की कहानी शुरू होती है फरवरी 2007 से जब में यांत्रिक प्रौद्योगिकी का एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन '**मैक्रो टू नैनो**' बिट्स पिलानी में आयोजित किया गया| जहां नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर के डॉ. प्रहलाद के स्नातक छात्र द्वारा निर्मित एक ह्यूमानॉइड रोबोट का प्रदर्शन किया गया| उसे देखकर अचंभित बिट्स के दो छात्र **समय** व **अर्पित** खुद को रोक नहीं पाए| उस छात्र ने यह महज़ 8 माह के अंतर्गत कर दिखाया था| यह समय व अर्पित के लिए एक झटका था| उस छात्र ने "निर्माण पहले अनुकरण बाद में" की महत्त्वपूर्ण सलाह भी दी| इस सलाह का महत्त्व **अक्युत1** के निर्माण के बाद पता चला क्योंकि 100 से भी अधिक स्नातक और स्नातकोत्तर भारतीय छात्रों ने ह्यूमानॉइड रोबोट पर थीसिस की हुई थी लेकिन कोई भी एक पूरा ह्यूमानॉइड बनाने में सफल नहीं हुआ| हम ह्यूमानॉइड बनाने में सक्षम हैं या नहीं यह जानने के लिए इन्होनें पहले स्क्रेप एल्युमिनियम व लैब में पड़ी मोटर्स का उपयोग करके '**बाइप्ड रोबोट**' का निर्माण किया| सफल बाइप्ड से प्रेरित होकर व प्रो. राज सिंह, सीरी कैम्पस(बिट्सियन बैच '76) की मदद से इन्होनें रोबोगेम्स 2008 में भाग लेने के लिए एक फुल साइज़ ह्यूमानॉइड बनाने की ठान ली|

अक्युत की टीम हर वर्ष के आरंभ में कुछ छात्र चयनित करती है| यह चयन प्रक्रिया तीन चरणों में होती है| पहला है गूगलिंग टेस्ट, जो यह सुनिश्चित करता है कि चयनित सूचना के विशाल ढेर से प्रतिभागी प्रासंगिक जानकारी पा सकता है| दूसरा है लॉजिक एनालिसिस, जो उम्मीदवारों की लॉजिक बिल्डिंग क्षमता को परखता है|

तीसरा है विशेष परीक्षण, जिसमें आवश्यकता व एक विशेष क्षेत्र में विशेषज्ञता के लिए उम्मीदवारों कि छटनी की जाती है| वर्किंग ऑवर्स की बात करें तो इनकी गिनती करना मुश्किल है क्योंकि अक्युत वालों का सारा खाली समय CRIS लैब में ही गुजरता है|

उपलब्धियों की बात करें तो अक्युत ने अपनी शुरुआत अक्युत 1 के साथ रोबोगेम्स 2008 में की थी जहाँ 30 टीमों में अक्युत का छठवां स्थान रहा| अक्युत **भारत की ओर से रोबोगेम्स में भाग लेने वाली पहली टीम** थी| इसके बाद अक्युत की टीम ने कई स्थानों जैसे रोबोवन-14, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी सहित देश-विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों में डेमोंस्ट्रेशन दिया| इसके बाद बिट्स पिलानी-गोवा कैम्पस के टेकफ़ेस्ट "क्वार्क-2009" में अक्युत-2 को लॉंच किया गया| सितम्बर 2009 में अक्युत को उनके दोनों रोबोट्स के साथ IDEEN एक्स्पो में प्रतिभाग का मौका मिला|

CEL Conquest: 'कॉन्क्वेस्ट' आज भारत का **सबसे बड़ा स्टार्टअप कॉन्क्लेव** है जिसके आयोजन का पूरा भार बिट्स पिलानी के छात्रों के एक दल पर है| कॉन्क्वेस्ट का उद्देश्य प्रमुख इंजीनियरिंग कॉलेज के साथ मिलकर भारत में स्टार्टअप क्रांति लाना है| इसके लिए वह स्टार्टप्स का बड़े पूंजीपतियों से मेल करवा कर उन्हें आर्थिक मज़बूती प्रदान करते हैं| कॉन्क्वेस्ट की शुरुआत वर्ष 2004 में एक **बिज़नेस प्लान प्रतियोगिता** के रूप में हुई थी| सन् 2006 आते आते कॉन्क्वेस्ट ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक कदम जमा लिए| वर्ष 2008 में 'कॉन्क्वेस्ट 2005' के विजेता मोबाइल चिकित्सक को पिरामल हेल्थकेयर ने अधिग्रहण कर सफल बनाया व नई कंपनी को "**पीरामल ई स्वास्थ्य**" नाम दिया| इसी वर्ष 'कॉन्क्वेस्ट 2006' विजेता 'iViz' सुरक्षा को IDG वेंचर्स से **2.5 करोड़ डॉलर** का एक वित्तपोषण प्राप्त हुआ| 2007 तक इसका ज्यादा फोकस नए विचारों को सलाह देने पर था ताकि वे आगे जाकर एक बड़ा स्टार्टअप बन सकें| हालाँकि यह विचार समय की कसौटी पर विफल रहा क्योंकि बहुत सारे व्यापारिक विचार सिर्फ कागजों तक ही सीमित रह गए| तब पूरे भारत में व्यापारिक योजना प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने प्रस्तुति को मुख्य व्यवसाय से अधिक महत्व देना शुरू कर दिया था| इस समस्या के निदान के लिए एक महत्त्वपूर्ण बदलाव किया गया कि विजेता को 25% राशि ही तुरंत प्रदान की जाएगी और बाकी 75% राशि व्यापार पंजीकृत होने के बाद| परिणामस्वरूप विजेता अपने विचारों को व्यवसाय का रूप देने लगे|

'कॉन्क्वेस्ट 2013' में लगभग 1200 लोगों ने भाग लिया| स्पॉन्सरशिप में तो इन्होनें बिट्स में होने वाले फेस्ट्स को भी पीछे छोड़ दिया| अगर हम कॉन्क्वेस्ट 2013 की सम्पूर्ण स्पॉन्सरशिप की बात करें तो यह आंकड़ा **2 करोड़** के लगभग है| कॉन्क्वेस्ट का टाइटल स्पॉन्सर '**ग्रुपऑन**' है तथा इस सूची में नोकिया, अमेज़न, पलाश वेंचर्स, नेक्सस वेंचर्स, कूलएज, सीडफंड आदि जैसे बड़े नाम भी शामिल हैं| उद्यम पूंजीपतियों की बात करें तो भारत के कई बड़े-बड़े उद्यम पूंजीपति कॉन्क्वेस्ट से जुड़े हुए हैं जिनमें कुछ नाम एक्सेल पार्टनर्स के आनंद डेनियल, सिकोया कैपिटल के वी.टी.भारद्वाज, ब्लूम वेंचर्स के संजय नाथ, लाइटस्पीड वेंचर्स के देव खरे आदि हैं| इन उद्यम पूंजीपतियों की मदद से कई विजेताओं और उपविजेताओं ने अपने विचारों को उड़ान दी जिनमें से कुछ नाम फ्रेशमेंटर्स(विजेता 2013), आईट्रैवलर्स(उपविजेता 2013), एनर्चर(विजेता 2012), पीरामलईस्वास्थ्य आदि सम्मिलित हैं|

छात्रसंघ का योगदान:

वास्तव में बिट्स परिसर में होने वाले ढाँचागत सभी सुधारों की शुरुआत एक "**वरिष्ठ प्रशासनिक समिति**" ही करती है लेकिन फिर भी छात्र-संघ प्रतिनिधि को इस समिति में अपने सुझाव देने के लिए और अंतिम निर्णय के पश्चात् उनके सहयोग और समर्थन के आधार पर कई ऐसे कदमों का सफलता पूर्वक कार्यान्वयन किया गया जिनसे बिट्स का स्वरुप हमेशा के लिए बदल गया| इन सुधारों या परिवर्तनों में इन छात्र प्रतिनिधियों का योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है| **हमारे सांस्कृतिक महोत्सव "ओएसिस" से लेकर**, SAC, AURO **फिल्टर्ड पानी, एक्सिस बैंक एटीएम, मेस इन्फ्रास्ट्रक्चर आदि अनेक ऐसे मुद्दे हैं जिनसे हर एक बिट्सियन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हैं**| इनमें से अंतिम बिंदु 'मेस इन्फ्रास्ट्रक्चर' ऐसा मुद्दा है जो पूरी तरह से छात्र संघ व कुछ अन्य विद्यार्थी समूहों द्वारा ही संचालित एवं नियंत्रित किया जाता है| इसके लिए एक **15 सदस्यीय** कमिटी बनाई गई है जो छात्र-संघ से पूर्णतयः स्वतंत्र है| जिसे "**मेस मॉडर्नाइजेशन कमिटी**" कहते हैं| यह बिंदु गत वर्ष चर्चा का विशेष केंद्र रहा था| 'मेस इंफ्रास्ट्रक्चर' के सुधार के साथ-साथ भोजन गुणवत्ता बेहतर करने के उद्देश्य से Sodexo नामक एक निजी कंपनी को इसकी जिम्मेदारी सौंपी गई थी जो आज भी मेस सञ्चालन में सक्रिय है| RAF(Recreational Activity Forum) मूवीज़ के लिए हाल ही में आया "डिजिटल प्रोजेक्टर" भी छात्र-संघ चुनावों के घोषणापत्र का एक बिंदु रहा है|

इस जांच-पड़ताल में एक रोचक बात भी सामने निकलकर आई| सन् 2009 में प्रसिद्ध गायक "शंकर महादेवन" ने बेहतर "साउंड-सिस्टम" न होने की कारण अपनी प्रस्तुति देने से मन कर दिया तो तात्कालिक छात्र-संघ अध्यक्ष ने पूर्व-छात्रों के सहयोग से कुछ ही दिनों के अन्दर सहयोग राशि जुटाकर शंकर महादेवन जी की अपेक्षा के अनुरूप ही "साउंड-सिस्टम" उपलब्ध कराया था| छात्र संघ प्रतिनिधि की सक्रियता का यह उदाहरण आज के छात्र-संघ के सदस्यगण भली-भाँति जानते हैं|

बिट्स छात्र संघ के प्रतिनिधि रहे पूर्व छात्रों में से कई आज अपने-अपने क्षेत्रों में बहुत सफल हैं| विजय शर्मा, अदिति पाणी, अजय चतुर्वेदी आदि मुख्य रूप से उल्लेखनीय हैं|

बिट्स के बाद, बिट्सियंस के साथ

-आकृतिश्रीवास्तव, प्रणय दुबे, ऐश्वर्या नलवाया

बिट्सा - बिट्स अलुम्नी का अंतर्राष्ट्रीय संगठन जो सन् 2000 के बाद स्थापित हुआ लेकिन अपने ध्येय "Increase potential of BITSians and BITS Pilani" और सक्षम कार्यकारिणी की बदौलत इतने कम समय में बिट्सियन्स का एक नया समाज ही स्थापित कर दिया। बिट्सा न केवल बिट्सियन्स को जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध है बल्कि बिट्स पिलानी में वर्त्तमान आवश्यकता के अनुसार बुनियादी ढाँचे में परिवर्तन के लिए भी कार्यरत है। बिट्स के 50 वर्षों के सफर ने इसे एक प्रकार से सामाजिक सम्पूर्णता दी है, यह सम्पूर्णता बौद्धिकता के साथ-साथ हर तरह के संसाधन से युक्त है।

एक बिट्सियन का बिट्सियन से रिश्ता -

1. <u>पूर्व-बिट्सियन, वर्त्तमान फैकल्टी</u>

अगर बिट्स के सभी कैम्पस को मिलाकर देखा जाए तो पाएंगे कि 20 से 25 प्रतिशत शिक्षक बिट्स के ही विद्यार्थी रह चुके हैं। उनमें से कई ने तो अपनी पढ़ाई खत्म करने के बाद भी नौकरी के लिए बाहर जाने के बजाय बिट्स में ही अपनी सेवाएँ प्रदान करना पसंद किया। इन शिक्षकों में से कई आईआईटी में आसानी से नौकरी पा सकते थे और कई अपनी नौकरी छोड़ कर यहाँ आकर शिक्षक बने। प्रो.मित्तल, प्रो.सुरेखा भनोट, श्री मनोज कनन, प्रो.राजीव गुप्ता , श्री अरुण कुमार वैश्य आदि नामों के साथ ऐसे शिक्षकों की सूची बहुत लम्बी है। इस तरह का उदाहरण अपनी उम्र के पचास बसंत पार कर चुके संस्थान में ही देखने को मिल सकता है। 1980 -1990 के समय बिट्स की फीस अन्य आईआईटीज़ के बराबर होती थी जिसके परिणाम स्वरूप शिक्षकों को कम वेतन मिल पाता था, परन्तु फिर भी इस संस्थान के प्रति अपने लगाव के चलते ही उन्होंने यहाँ अपनी सेवाएँ देने का निर्णय किया।

2.<u>बिट्स ऑनलाइन समुदाय -</u>

'बिट्सियन्स फॉर ईच अदर', 'बिट्स टु आई.ए.एस.', 'बिट्स टु बी स्कूल', 'बिट्स टु एम.एस. पी.एच.डी.' इत्यादि ऑनलाइन समुदायों को लेकर बिट्सियन्स में इतना अपनापन है कि यहाँ न केवल उच्च स्तर की विषय सम्बन्धित चर्चा होती है बल्कि किसी शहर में कोई अपना कमरा शेयर करने तक के बारे में कोई भी पूछ सकता है।

ये समुदाय अपने आप में ही सम्पूर्ण हैं। बिट्स के पचास वर्षों के लम्बे समय ने इन समुदायों को पीढ़ियों से लेकर व्यवसायिक पेशों तक में विविधता दी है।

3. <u>बिट्सा चैप्टर गतिविधियाँ -</u>

भारत के लगभग सभी प्रमुख शहरों में बिट्सा के चैप्टर हैं। इसके अतिरिक्त भारत के बाहर भी कई स्थानों पर, जैसे अफ्रीका में मॉरिशस, एशिया में चीन, हांगकांग, जापान, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड आदि स्थानों में सक्रिय है। सैन फ्रांसिस्को में रहने वाले बिट्सियंस का संगठन 'सिलिकॉन वैली' के नाम से है। ये चैप्टर समय-समय पर अनेक सामाजिक गतिविधियाँ आयोजित करवाते हैं -

कई बार अपनी रोज की ज़िन्दगी से तरोताजा होने के लिए बिट्सियंस नाच - गाने के लिए भी मिलते हैं। इस उद्देश्य के लिए बिट्सा बैंगलोर ने 'बैश', बिट्सा-ANZ ने 'स्प्रिंगनाईट', न्यू जर्सी में बिट्सा चैप्टर ने 'एनुअल गाला 2013' आदि इवेंट्स आयोजित किए। इन गतिविधियों में कई खेल सम्बंधित कार्यक्रम भी रखे जाते रहे हैं, जैसे फरवरी 2013 में बिट्सा- मिडल ईस्ट ने एक क्रिकेट मैच और अप्रैल में बास्केटबॉल मेच का आयोजन किया था। इसके अतिरिक्त कई वार्षिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं, जैसे : एनुअल गेट टुगेदर, चैप्टर की सालाना मीट्स इत्यादि|

कई दिलचस्प कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है| उदाहरण के लिए अहमदाबाद में बिट्सियंस हर महीने किसी रविवार को चाय और समोसे के लिए गार्डन में मिलते हैं। त्यौहारों के अवसर पर भी ये साथ में जश्न मनाते हैं, जैसे कि 16 नवंबर 2013 को जयपुर में दीवाली मिलन रखा गया था जिसमें सभी बिट्सियंस सपरिवार आमंत्रित थे।

2 अगस्त को "बिट्सियंस डे" घोषित कर 2013 में पहला बिट्सियन डे मनाया गया। उस दिन Synopsys, Oracle, Sabre holdings, Microsoft, Cisco, Amazon, Flipkart, Google आदि सभी कम्पनियों में कार्यरत बिट्सियंस अपनी बिट्स टीशर्ट पहन कर काम पर गए। इसके अतिरिक्त विश्व भर में कई जगहों जैसे मुम्बई, दिल्ली, चेन्नई, हैदराबाद, बैंगलोर, जयपुर, पुणे, नागपुर, एरिज़ोना, सिएटल, न्यूयॉर्क, शिकागो, दुबई में मैराथन, लंच मीट्स, कॉफी मीट्स, डिनर मीट्स इत्यादि आयोजित की गईं।

4.<u>बिट्स.ऐड:</u>

बिट्स.ऐड समुदाय अपने आप में एक सामाजिक परिवर्तन और उत्थान में रुचि रखने वाले बिट्सियन्स को मिलाने का माध्यम है।

5.<u>बिट्सा महिला समिति:</u>

बुवाना दयानंदन के 2005 में छपे लेख से प्रभावित हो कुछ बिट्सियन महिला - अलुम्नी ने बिट्सा महिला समिति की स्थापना कर डाली। बिट्सियन महिला अलुम्नी को परिवार और कॅरियर में संतुलन बनाने की दिशा में कार्य करने वाले बिट्सा के इस अंग में सारे पद महिला-बिट्सियन अलुम्नी द्वारा ग्रहीत हैं।

6. <u>बैच अम्बेसडर प्रोग्राम:</u>

बिट्सा के बैच अम्बेसडर प्रोग्राम के बारे में कम ही लोग जानते हैं। हर बैच से कुछ लोगों को अपने बैच का अम्बेसडर बनाया जाता है ताकि बिट्सियन्स संपर्क में रह सकें।

यह तो बात हुई बिट्सियन्स के बिट्सियन्स से रिश्ते की, पर एक पूर्वछात्र अपनी मातृसंस्था को कैसे भूल सकता है। आईए जानते हैं बिट्स ने गुरुदक्षिणा में क्या पाया है -

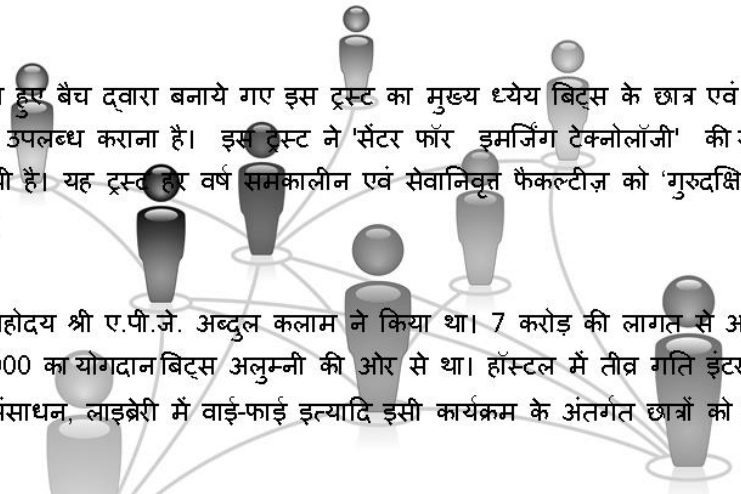

बिट्स'75 चैरिटेबल ट्रस्ट -

बिट्स पिलानी से 1975 में पास हुए बैच द्वारा बनाये गए इस ट्रस्ट का मुख्य ध्येय बिट्स के छात्र एवं फैकल्टी को उद्यमिता की दिशा में संसाधन उपलब्ध कराना है। इस ट्रस्ट ने 'सेंटर फॉर इमर्जिंग टेक्नोलॉजी' की स्थापना में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। यह ट्रस्ट हर वर्ष समकालीन एवं सेवानिवृत्त फैकल्टीज़ को 'गुरुदक्षिणा' नामक कार्यक्रम में सम्मानित करता है।

बिट्स कनेक्ट 1.0 -

इसका उद्घाटन पूर्व राष्ट्रपति महोदय श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने किया था। 7 करोड़ की लागत से आरम्भ हुए इस प्रोजेक्ट में लगभग $750,000 का योगदान बिट्स अलुम्नी की ओर से था। हॉस्टल में तीव्र गति इंटरनेट, ऑनलाइन स्टडी-मटीरियल के संसाधन, लाइब्रेरी में वाई-फाई इत्यादि इसी कार्यक्रम के अंतर्गत छात्रों को उपलब्ध हैं।

बिट्स कनेक्ट 2.0 -

जनवरी 2013 में बिट्स कनेक्ट 2.0 ने दस्तक दी जिसने 'टेली प्रज़ेंस' और 'इंटर-कनेक्टिविटी' से बिट्स के चारों कैम्पस को जोड़ा। यह अत्याधुनिक सुविधा विश्व भर में चुनिंदा विश्वविद्यालयों में ही उपलब्ध है और बिट्स ने भी इस क्षेत्र में अपना परचम लहरा दिया है। अब विश्व के किसी भी कोने से किसी प्रोफेसर, गेस्ट या बिट्स अलुम्नी चारों कैम्पस से एक ही समय जुड़ सकते हैं।

पिलानी रिसोर्स सेंटर:

SAC दरवाज़े से बाहर निकलने पर मिलने वाली बड़ी सी बिल्डिंग 'पिलानी रिसोर्स सेंटर' अलुम्नी की ही देन है| यह मुख्यतःपिलानी के लोगों में रोज़गार हुनर को बढ़ाने हेतु कार्यरत है। इस कार्य के लिये भी एक अलग से ट्रस्ट है जो इस पूरे प्रोजेक्ट की निगरानी रखता है।

रजत एवं स्वर्ण जयंती उत्सव -

अब बिट्स में कोई ऐसा वर्ष नहीं जाता जब बीते समय में यहाँ के छात्र रह चुके लोग यहाँ न आते हों और सिरे से परिवर्तित हो चुके कैम्पस को देखकर अचंभित न होते हों| हर वर्ष बिट्स में सम्बंधित बैच का स्वर्ण एवं रजत जयन्ती उत्सव आयोजित किया जाता है और पुराने छात्र न केवल पुरानी संस्कृति के बारे में बिट्सियन्स को बताते हैं बल्कि छात्रों की किसी भी प्रकार से मदद भी करते हैं, चाहे स्टार्ट-अप आइडियाज़ हों या कोई स्टूडेंट -प्रोजेक्ट।

इनके अतिरिक्त 'एल.के. माहेश्वरी फंड' EEE,E&I के छात्रों को न केवल इलेक्ट्रॉनिक्स प्रोजेक्ट्स के लिए प्रोत्साहित करता है बल्कि छात्रों को किसी कॉन्फ्रेंस में भागीदारी के लिए आर्थिक रूप से भी मदद करता है। इसके अलावा बिट्सा की अनेक छात्रवृत्तियाँ आर्थिक रूप से पिछड़े छात्रों को मदद देती है।

नया बास्केटबाल कोर्ट, जिसका उद्घाटन बॉसम मे किया गया था, एक भूतपूर्व छात्र द्वारा ही बनवाया गया है। साथ ही शिक्षकों को रिसर्च के लिये भूतपूर्व छात्रों द्वारा "Endowed Chair" के माध्यम से आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है।

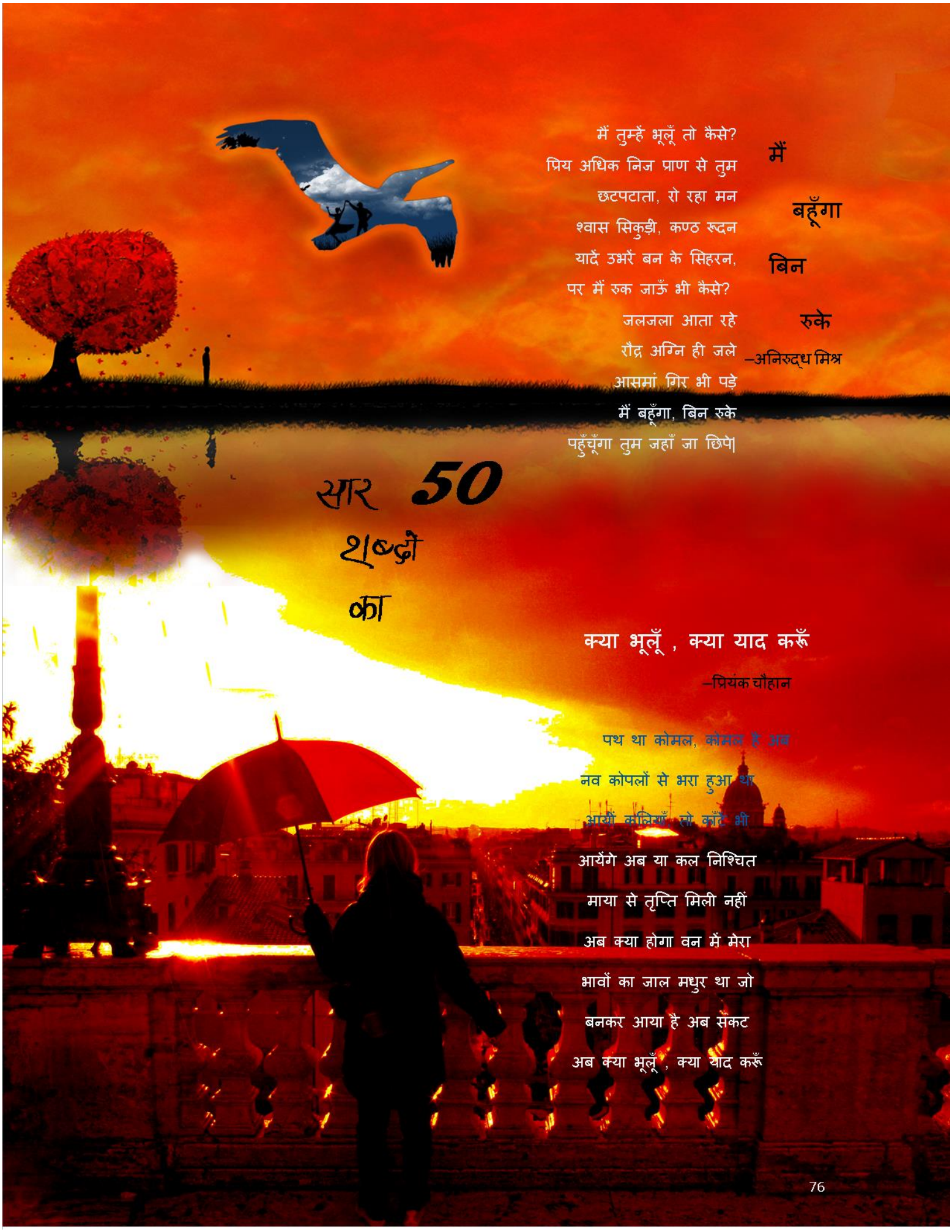

मैं बहूँगा बिन रुके

–अनिरुद्ध मिश्र

मैं तुम्हें भूलूँ तो कैसे?
प्रिय अधिक निज प्राण से तुम
छटपटाता, रो रहा मन
श्वास सिकुड़ी, कण्ठ रूदन
यादें उभरें बन के सिहरन,
पर मैं रुक जाऊँ भी कैसे?
जलजला आता रहे
रौद्र अग्नि ही जले
आसमां गिर भी पड़े
मैं बहूँगा, बिन रुके
पहुँचूँगा तुम जहाँ जा छिपे|

सार 50 शब्दों का

क्या भूलूँ , क्या याद करूँ

–प्रियंक चौहान

पथ था कोमल, कोमल है अब
नव कोपलों से भरा हुआ था
आयीं कलियाँ तो काँटे भी
आयेंगे अब या कल निश्चित
माया से तृप्ति मिली नहीं
अब क्या होगा वन में मेरा
भावों का जाल मधुर था जो
बनकर आया है अब संकट
अब क्या भूलूँ , क्या याद करूँ

कल भी आज भी और कल भी

दिव्यांशु चौधरी, इला श्री

परिवर्तन, बदलाव - शब्द सुनते ही ऐसा लगता है जैसे कि कोई किसी आन्दोलन का सञ्चालन हो रहा हो या फिर किसी पुरातन विभाग की मीटिंग चल रही हो। मगर बिट्स में पढ़ रहे छात्रों के लिए 'परिवर्तन' शब्द अभी एक अहम अर्थ लिए हुए है। परिवर्तन की आड़ में कैंपस परिवर्तित होता दिखने लगा है, हरा भरा rotunda व gym-g में खड़ा नया बास्केटबॉल कोर्ट इसी परिवर्तन का प्रमाण दे रहे हैं।

यह बदलाव जितना लुभावना और चकाचौंध भरा लगता है उतना ही डरावना भी लगता है, डर लगता है कि इस बदलाव की होड़ में कहीं खुद ही न बदल जाएँ| कॉलेज की स्थापना से लेकर अब तक देखा जाए तो नई लैब से लेकर mess के खाने तक ऐसा बहुत कुछ है जो बदल गया है पर इससे भी दिलचस्प बात है कि काफी कुछ ऐसा भी है जो नहीं बदला है|

अगर रेत के धोरों वाले प्रदेश राजस्थान की बात की जाए तो माउंट आबू के बाद शायद हमारा कैंपस ही है जो अपनी हरी भरी खूबसूरती का बखान फक्र के साथ कर सकता है। यहाँ की कुदरती खूबसूरती यहाँ की हरियाली और जीव विविधता से है । बिट्स में लगे पेड़-पौधे और यहाँ की हरीयाली ने जहां कैंपस की तस्वीरों को फेसबुक पर कई 'likes' दिलवाए हैं वहीं हॉस्टल से क्लास की दूरी में मिलने वाली छाया भी इन्हीं खुबसूरत वृक्षों की कृपा है| यह हरियाली ही है जो न जाने कहाँ से यहाँ पर स्थायी रूप से स्थापित कीट-पतंगों और पक्षियों को खींच लायी है। डोपी और फोटॉग के हमेशा ही निशाने पर रहे ये पक्षी और यहाँ की गिलहरियाँ बिट्स को हमसे भी ज्यादा अपना समझती हैं, तभी तो जहाँ एक चिड़िया sky में आपकी सैंडविच पे मुँह मारने से बिल्कुल नहीं कतराती वहीं FD1 के रास्ते में एक गिलहरी आपका रास्ता काटकर कैंपस की गलियों पर अपना दावा पेश करती है| हमारे खूबसूरत पक्षीराज मोर को भूलने की गलती तो बिल्कुल भी न करें| इठलाकर चलने की इसकी अदा का तो हर शख्स दीवाना है। सूत्रों के अनुसार यह कैंपस पक्षियों की लगभग सौ अलग प्रजातियों को शरण देता है। यहाँ रहने वालों को बिट्स सदा रेत में बसे इस ओएसिस का अनुभव कराता रहेगा।

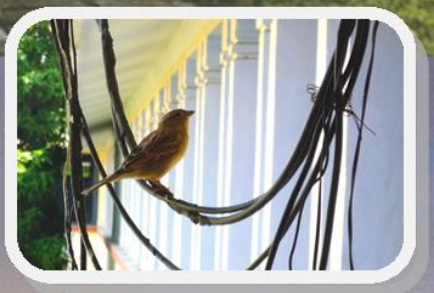

एक और चीज़ है जो न बदली है और न बदलेगी, वो है हमारी "आस्था"। बात भगवान में विश्वास या श्रद्धा की नहीं, बस आस्था की हो रही है। आस्था जो हमें गणेश पूजा और सरस्वती पूजन के लिए पूजा ग्राउंड्स ले जाती है, आस्था जो हमें जन्माष्टमी पर रात 12 बजे मंदिर में ले जाती है। बिट्स में हर छोटे-बड़े त्योहार को मनाने में छात्रों की सराहनीय भागीदारी रही है फिर चाहे वह FD2 में छुड़ाए गए दिवाली के पटाखे हों, होली पर फाड़ी गई पुरानी शर्ट हो या गणपति विसर्जन पर किया गया बेसुध नाच हो। तभी तो घर से दूर होने के और छुट्टियों की सख्त कमी के बावजूद हर त्योहार यहाँ परम्पराओं व उमंग के साथ बनाया जाता है और बनाया जाता रहेगा।

इसी विषय कि एक और महत्वपूर्ण कड़ी है बिट्स के रीजनल अस्सोसिएशन्स । विभिन्न प्रदेशों के मानक ये समूह अपने जगह की सांस्कृतिक विविधता को कल्चरल नाइट्स से प्रदर्शित करते हैं। ये ग्रुप्स बिट्स में बहुत पुराने समय से स्थापित हैं और हर साल नाइट्स और खानपान कि विविधता से बिट्स की महिमा को और गौरवान्वित करते हैं|

हमारे कॉलेज के इस अस्तित्व में आने से भी पहले बना माँ सरस्वती का यह मंदिर बिट्सियंस की ज़िंदगी का एक अटूट हिस्सा है, चाहे वह T-lawns में पहली बार हुए क्लब इंटरेक्शन्स हों या प्लेसमेंट के बाद भगवान को किया गया 'Thank You'. 'शारदा पीठ' न केवल माँ सरस्वती के प्रति श्रद्धा का केंद्र है बल्कि सुंदरता का जीवंत उदाहरण भी है। लाल पृष्ठभूमि के आगे उत्तर की तरफ माँ शारदा की मूर्ति और जी.डी. बिरला जी का माँ शारदा को प्रणाम बिट्स के मंत्र "ज्ञानं परमम् बलम् " का शानदार चित्रण है। मंदिर की दीवारों में देवी-देवता ही नहीं बल्कि अनेक महान व्यक्तित्वों की सजीव शिल्प-कारीगरी इस श्रद्धा केंद्र को अद्वितीय बनती है। शांत, सहज और खुशनुमा मौसम कल भी मंदिर की सीढ़ियों का भाग था, और कल भी रहेगा|

क्लॉक टॉवर बिट्स की शान का प्रतीक है। ऊँचाई और समय बताने वाली दो सुईयाँ ही क्लॉक टॉवर की पहचान हैं। शारदा पीठ के सापेक्ष इसकी स्थिति अपने आप में मानो यह सन्देश देती है कि जैसे शिक्षा का यह संस्थान ज्ञान की देवी की ओर समर्पण भाव से उनकी निरंतर कृपा के लिए प्रार्थना में लगा हुआ है|

इस मौके पर आप बिट्स का पारम्परिक रंग ज़रूर याद कीजिए| पूरा कैंपस इसी क्रीमिश पीले रंग में रंगा हुआ है | ये रंग हमें बिट्स की 50 साल की सभ्यता एवं इतिहास का सुखद एहसास दिलाता है | हाल ही में निर्मित भूमिगत कैंपस चाहे अपने आप में कितना ही आधुनिक क्यों न हो , उसपे चढ़ा ये पारंपरिक रंग हमें हर क्षण इसे उस पुरानी पीढ़ी के वाहक के रूप में ही प्रदर्शित करता रहेगा|

चाहे अकादमिक प्रारूप में बिट्स में कितने भी परिवर्तन हुए हों, शून्य प्रतिशत अनिवार्य उपस्थिति वाला प्रावधान ऐसा है जो परिवर्तित नहीं हुआ। यह उन कुछ प्रावधानों में से एक है जो अंतर्राष्ट्रीय पटल पर बिट्स की अलग छवि बनाते हैं। बिट्स की समृद्ध छात्र-संस्कृति में इस बिंदु का बहुत बड़ा योगदान है और छात्रों में सबसे ज्यादा प्रिय खुली सोच वाले अकादमिक निर्णयों में से यह एक है।

इसी बीच शायद हम रेड़ियों को अनदेखा तो नहीं कर रहे ? हर बिट्सियन की अनेक शामें इन छोटी-छोटी दुकानों पर बीती हैं । यहाँ के पापड़ी एवं सैम चाट को हम चाह कर भी शायद नहीं भुला पाएंगे । नागर जी और कृष्णा रेड़ी इनमें से प्रमुख हैं जिनका लज़ीज़ खाना लोगों को उँगलियाँ चाटने पर मजबूर कर देता है । साथ ही इनकी चटपटी कहानियाँ हमारा टाइमपास करने के लिए काफी होती हैं।

हम तो यही उम्मीद करते हैं कि आपकी जिंदगी में और कैंपस में 'परिवर्तन' उतना ही हो जितना सबके लिए सुखद है| परिवर्तन के इस दौर में हम इतने न बदल जाएँ कि कहीं हमारा मूल उद्देश्य ही हमें दिखाई पड़ना बंद हो जाए| खैर, अब आपसे अलविदा कहने का समय आ गया है| बिट्स के स्वर्ण– जयंती वर्ष की कहानी कहते-कहते कब समय निकल गया, हमें पता ही न चला| आशा है आप को यह सफ़र कुछ मुस्कान भरे पल जरूर दे गया होगा| फिर मिलेंगे आपसे, तब तक के लिए अलविदा....

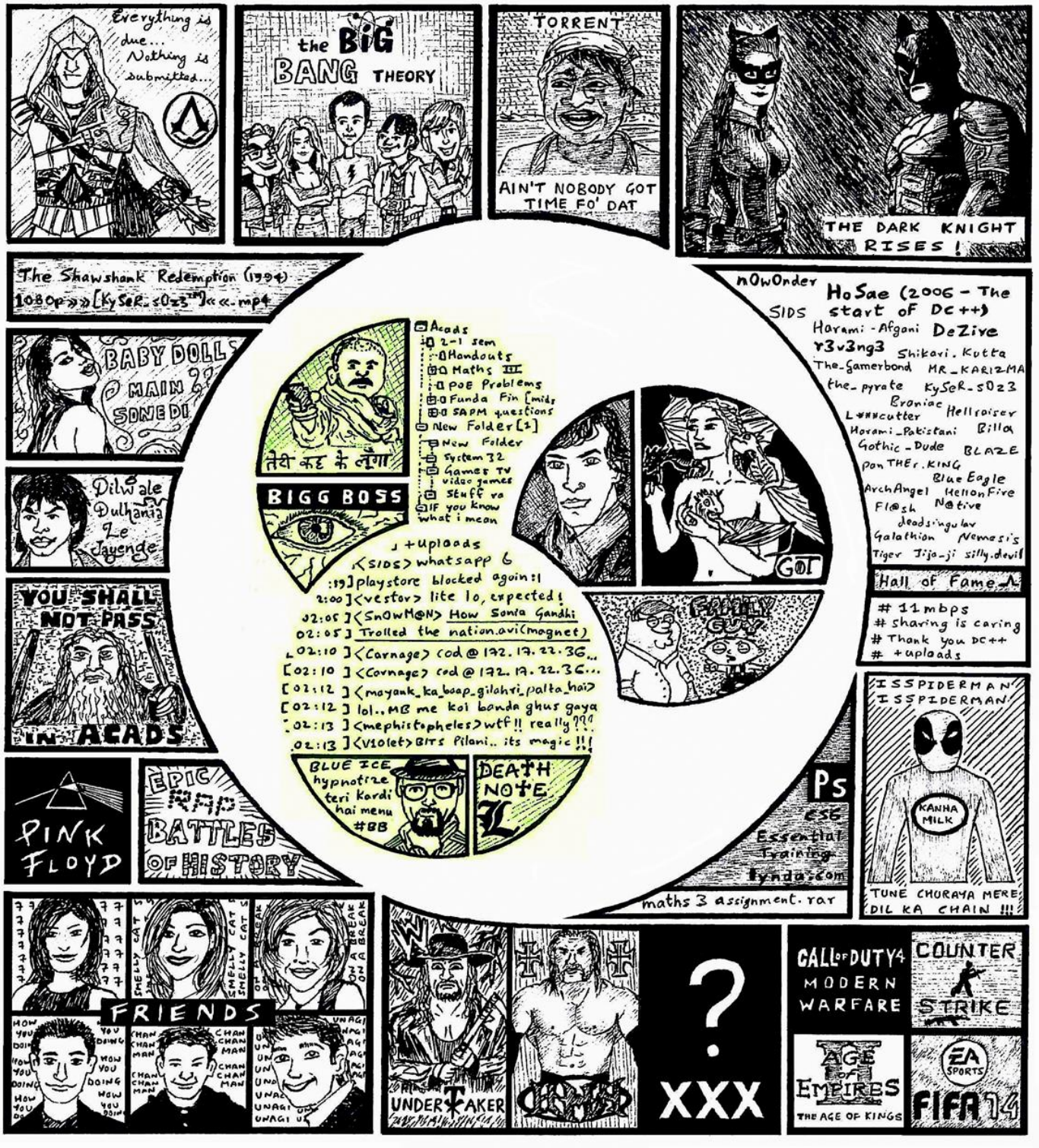

DC++

चित्रांकन - रोहित पमनानी

Rohit Pamnani